पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२३, अंकः-२, फरवरी, सन्-२०२१, सं०-२०७७वि०, दयानंदाब्द १९६, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

प्रसंगवश

‘मानस’ में ‘कोरोना’ खोजना संत तुलसीदास के मंतव्य से खिलवाड़

भ्रम फैलाने की जगह बचाव के प्रयास जरूरी

-डॉ. वेद प्रकाश आर्य-

मनुष्य जाति के इतिहास में सर्वाधिक घातक एवं संक्रमणशील महामारी ‘कोरोना’ के भीषण आक्रमण के कारण उत्पन्न परिस्थितियो ने गवेषकों का ध्यान ‘कोरोना’ शब्द के उद्‌भव और व्युत्पत्ति की ओर खींचा। इस दृष्टि से कई बड़े ही रोचक प्रसंग सामने आये। महामारी के दौरान जब थालियाँ घनघनाई गईं और मोमबत्तियाँ जलायी गईं तो उसके बाद एक दिन मेरे आवास पर एक परिचित युवक ने आकर घर में रखी हुई ‘रामचरितमानस’ की पोथियों को उलटना पुलटना शुरू किया। मैंने पूछा, ‘भाई क्या बात है, रामचरितमानस में आप क्या खोज रहे हैं?’ उत्तर मिला, ‘यह देख रहा हूँ कि ‘मानस’ के बालकाण्ड में कहीं कोई ‘बाल’ तो पृष्ठों के मध्य नहीं पड़ा हुआ है।’ मैंने कहा, बाल मिलने या न मिलने से होगा क्या?’ युवक ने कहा, ‘एक पंडित जी कह रहे थे कि रामचरितमान के बालकाण्ड में बाल मिलने के कारण ही विश्व में ‘कोरोना’ का भीषण प्रकोप हो रहा है।’ अच्छी बात यह हुई कि बालकाण्ड के पृष्ठों में कोई बाल नहीं निकला!

‘रामचरितमानस’ में बाल की खोज हो ही रही थी कि ‘वाट्सएप’ पर एक ‘मानस मर्मज्ञ’ को बधाइयाँ मिलने के समाचार ने मुझे चौंका दिया। ‘मानस मर्मज्ञ’ ने यह खोज की कि उत्तर काण्ड में ‘कोरोना’ वायरस की उत्पत्ति की भविष्यवाणी की गई है। क्योंकि एक चौपाई में ‘चमगादुर’ शब्द का प्रयोग गोस्वामी जी महाराज ने किया है। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में खोजने पर दोहा संख्या १२०, अर्द्धाली १४, में जिस ‘चमगादुर’ शब्द का अनुसंधान स्वनामधन्य मानस मर्मज्ञ ने किया था, वह इस प्रकार है-

सब कै निन्दा जे जड़ करहीं,
ते चमगादुर होइ अवतरहीं।

इस प्रसंग में काकभुशुंडि द्वारा खगराज गरुड़ को यह बताया जा रहा है कि शुभ कर्मों का शुभ फल मिलता है और अशुभ कर्मों का अशुभ फल मिलता है। जो प्राणी दूसरों की निन्दा करते हैं वे अगले जन्म में ‘चमगादुर’ बनते हैं। परनिन्दा आदि अशुभ कर्मों से लोगों को विरत करने का यह परम्परागत तरीका साधुसन्त कविगण अपनाते रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी ऐसा ही किया है। इसका आधुनिक युग के ‘कोरोना’ वायरस की उत्पत्ति से कोई संबन्ध नहीं है। इस पंक्ति में प्रयुक्त ‘चमगादुर’ शब्द से कोरोना की उत्पत्ति देखना गोस्वामी जी की शिक्षाओं की ओर से पाठकों ध्यान हटाकर उन्हें भविष्यवक्ता सिद्ध करने का प्रयास मात्र है। गोस्वामी जी द्वारा उत्तर काण्ड में कलियुग के विकारों का वर्णन यथार्थ है क्योंकि आज से भी गई गुजरी अन्याय, विषमता निर्धनता से परिपूर्ण परिस्थितियाँ गोस्वामी जी के युग में मौजूद थीं। इस प्रसंग में एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो कोरोना वासरस की भावी उत्पत्ति को संकेतित करता हो। जहाँ तक कफ, खाँसी, सन्निपात जैसे रोगों की बात है, तो यह रोग पुराने जमाने से आजतक चले आ रहे हैं। अतः मानस मर्मज्ञ का तथाकथित रहस्योद्‌घाटन या खोज कुछ भावुक भक्तों को भले ही चमत्कृत करता हो किन्तु यह गोस्वामी जी के मन्तव्य के साथ खिलवाड़ ही है। एक अच्छी बात यह है कि आज टीवी के कई चैनल ‘सोशल मीडिया’ द्वारा फैलाई गई अफवाहों का परीक्षण-विश्लेषण करते हैं और सत्य को प्रकाशित कर देते हैं। मानस मर्मज्ञ द्वारा फैलाये गये विभ्रम की पोल खोलते हुए एक चैनल ने कहा है- ‘यदि चमगादुर से कोरोना वायरस उत्पत्ति की बात रामचरितमानस में दर्ज थी तो मानस मर्मज्ञ ने एक दो वर्ष पहले ही इसे क्यों नहीं बता दिया? जिससे भारी विनाश और नरसंहार से मानव जाति को बचाया जा सकता?

मनोरंजन के लिए ऐसी बातें तो ‘रामचरितमानस’ जैसे वृहद् काव्य में पहले भी खोजी जाती रही हैं। समाजवादी नेता और चिन्तक स्व.डॉ. राममनोहर लोहिया की एक बात इस सिलसिले में याद आ रही है, वे अपने समकालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के कटु आलोचक थे। नेहरू जी की तीखी आलोचना का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। वे नेहरू जी को एक दुःखदायी रोग बताते थे और इसके लिए गोस्वामी तुलसीदास जी की कृति रामचरितमानस का हवाला देते थे। उनके अनुसार नेहरू रूपी रोग का उल्लेख गोस्वामी जी ने ‘मानस’ में किया है। उत्तरकाण्ड की एक अर्द्धाली (दो.१२०, छं.३६) जिसे लोहिया जी सुनाते थे- वह इस प्रकार है-

अहंकार अति दुखद डमरुआ,
दंभ कपट मद मान नेहरूआ।

यहाँ कलियुग के रोगों का कागभुशुंडि जी वर्णन कर रहे हैं। ‘नेहरूआ’ एक नसों से संबन्धित कष्टप्रद रोग है। नेहरू जी के नाम से इसका कोई संबन्ध नहीं है। मानस के ‘नेहरूआ’ शब्द को नेहरू जी से जोड़कर एक कल्पना की उड़ान भरी जा सकती है, मनोविनोद या व्यंग्य किया जा सकता है, किसी की खिल्ली उड़ाई जा सकती है किन्तु इस जोड़ तोड़ से किसी को मानस मर्मज्ञता नहीं मिल जाती। जिस प्रकार इस ‘नेहरूआ’ का नेहरू जी से कोई संबन्ध नहीं है, उसी तरह ‘चमगादुर’ शब्द का ‘कोरोना’ की उत्पत्ति से कोई संबन्ध नहीं। ‘कोरोना’ की इस उत्पत्ति की खोज पर जब ‘सोशल मीडिया’ में ‘मानस मर्मज्ञ’ की शाबाशी दी जा रही थी, मेरा ध्यान महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस निर्देश की ओर गया-‘वेदों की ओर लौटो’। फलतः मैंने वेदों में यह जानने का प्रयास किया कि वेदों में क्या इस संबन्ध में कोई संकेत अथवा उल्लेख है तो बड़े सकारात्मक परिणाम सामने आये।

विश्व में शांति और सुव्यवस्था का उद्‌घोष करने वाले वेद में ‘सर्वे सन्तु निरामया’ के अनुरूप मनुष्य जाति को उत्तम स्वास्थ्य के साथ ही उन खतरों से भी आगाह किया है, जो मनुष्य के लिए परेशानी और चिन्ता का सबब बन सकते हैं। प्राची, दक्षिण, प्रतीची, उदीची, ध्रुव, ऊर्ध्व- छः दिशाओं को साक्षी मानकर अथर्ववेद कांड-३, सूक्त-२७, मंत्र-१-६ में ऐसे विषाणुओं (वायरस) से सजग रहने की चेतावनी दी गई है- जो मानव जाति की जिन्दगी को भयानक खतरों में डाल सकते हैं तथा ऐसे दुस्साध्य

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

प्रभु के सहज कर्म

अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृश्रे कुह चिद्दिवेयुः।
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति॥

(ऋग्वेद 1/24/10)

किसने नभ में, ऊँचाई पर
टहराए हैं,
दृश्य-अदृश्य लोक-ग्रह अगणित!
हमें दीख पड़ते रजनी में,
दिन में कहाँ चले जाते हैं?

यह तो प्रभु के सहज कर्म हैं,
टहरे जो उच्च गगन में
दृश्य-अदृश्य लोक-ग्रह अगणित!

बीच गगन में ही रहते ये,
लुप्त नहीं होते दिन में भी।
चंद्र और नक्षत्र दिवस में
नहीं दीखते, इसका कारण
दिनकर का जगमग प्रकाश है,
जो इनको अदृश्य कर देता!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

'वीर जी' - एक सूर्यास्त

'वीरजी' के निधन पर अपनी श्रद्धांजलि में मैंने कहा था- 'आर्य समाज सीतापुर का सूर्य अस्त हो गया।' 'वीरजी' को सूर्य मैंने इसलिए कहा था क्योंकि सत्य 'सूर्य' ही होता है। 'वीरजी' सत्य के उपासक थे। निर्भीकता, स्पष्टवादिता और सत्य के प्रति समर्पण उनकी पहचान थी। आर्य समाज सीतापुर ने विगत सत्तर वर्षों में अनेक उतार चढ़ाव देखे। कई युग आये गये। नेतृत्व कई बार बदला किन्तु यदि कोई नहीं बदला तो वे थे 'वीरजी'। वे आर्य समाज के किसी विशिष्ट पद पर कभी नहीं रहे किन्तु उन्होंने सत्य का कभी दामन नहीं छोड़ा। वे खरी और सही बात कह देते थे- इसपर उन्हें कई बार अपमान, निरादर झेलना, कड़ुए घूंट भी उन्हें पीने पड़े। किन्तु अपमान के घूंट पीने के बाद भी 'वीरजी' ने न तो सत्य से मुख मोड़ा और न आर्य समाज का दामन छोड़ा। ऐसे नर-रत्न को सूर्य न कहा जाय तो क्या कहा जाय। आज के युग में पद लोलुपों और चाटुकारों की भीड़ में ऐसे व्यक्ति भले ही कोई पद न प्राप्त कर सकें किन्तु आर्य जनता के दिलों में उनका स्थान सुनिश्चित होता है। कविवर वंशीधर शुक्ल के शब्दों में-

सत्य सदा शूली चढ़ता है, असत राज सिंहासन।
किन्तु सत्य ही करता रहता, असत जगत पर शासन।

'वीरजी' स्वनामधन्य श्री शिवनारायण निगम के ज्येष्ठ पुत्र थे। जीवन के नवोन्मेष में (१९५२-५३) में अपने छोटे भाई श्री जितेन्द्र कुमार के साथ वीरजित् एण्ड कम्पनी बनाई। इस कम्पनी ने बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिए एक प्रोडक्ट तैयार किया, जिसका नाम था-'बाल मंगल तेल'। एक दिन वीरजी के पिताजी ने एक ताँगे पर माइक बंधवाया और मुझसे कहा, 'वेद, ताँगे पर बैठकर 'बाल मंगल तेल' का प्रचार कर दो।' मैं सहर्ष तैयार हो गया और एक घंटे तक शाम को सात बजे से आठ बजे तक 'बाल मंगल तेल' का प्रचार किया। माइक पर बोलने का उन दिनों मुझे काफी शौक था- मैं उस समय आर.आर.डी.कालेज सीतापुर में हाईस्कूल का छात्र था। इससे वीरजी के साथ मेरे संबन्धों का आप अनुमान लगा सकते हैं। उनके पिताजी मुझसे अत्यधिक स्नेह करते थे।

१९५२-५३ में आर्य समाज सीतापुर ने अपना स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया। देश-विदेश का कोई भी आर्य नेता ऐसा नहीं था, जो उत्सव में न आमंत्रित हो। उत्सव की समाप्ति पर सामूहिक चित्र का आयोजन हुआ; जिसमें बाहरी विद्वानों के साथ आर्य समाज सीतापुर तथा स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति के लोग ही बैठ सकते थे। इस बड़े ग्रुप फोटो की व्यवस्था देखने हेतु मैं भी एक किनारे खड़ा था। जब सीटिंग प्लान के मुताबिक सभी लोग अपने अपने स्थान पर बैठ गये तथा फोटोग्राफर ने एक-दो कहा, तीन कहना बाकी था तभी उसकी निगाह अचानक आर्य वीर दल का बैज लगाकर एक कोने में खड़े हुए मुझ पर पड़ी। वह दौड़कर आया और बोला-'अरे, वालंटियर हो- आओ आओ, बैठो।' कहकर मुझे सबसे आगे विद्वानों के चरणों में बिठा दिया। ग्रुपफोटो बहुत अच्छा आया था। बहुत दिनों तक आर्य समाज मंदिर घासमंडी सीतपुर के भव्य सत्यंग हाल की शोभा बढ़ाता रहा। मैं उस बृहद् ग्रुपफोटो की छायाप्रति बनवाना चाहता था। जब आर्य समाज मंदिर का भव्य सत्संग हाल ध्वस्त हुआ तो वह फोटो वीरजी के पास आ गया। वीरजी ने मुझे देने का वायदा किया था तभी भाई रघुनाथ सिंह आर्य कानपुर से आये थे और वह फोटो अपने साथ ले गये। जब तक मैं कानपुर पहुँचूं, भाई रघुनाथ सिंह आर्य जी दिवंगत हो गये। तब वीर जी ने कहा- 'अच्छा मैं कानपुर से उसे मंगाकर आपको दे दूंगा।' किन्तु अब वीरजी भी चले गये। उस ऐतिहासिक ग्रुपफोटो के मिलने की आशाएं भी वीरजी के साथ ही चली गई हैं। छात्रावस्था का मेरा एक चित्र उसी के साथ चला गया।

वीर जी मनसा वाचा कर्मणा सच्चे आर्य थे। वे प्रतिवर्ष जबतक उनमें सामर्थ्य रही महर्षि के जन्मस्थान टंकारा शिवरात्रि के अवसर पर अवश्य जाते थे। अंतिम बार जब गये तो वहाँ श्री अजय जी द्वारा, जो टंकारा ट्रस्ट की देखभाल करते हैं, महर्षि दयानन्द पर एक फिल्म का प्रदर्शन किया गया था। जिसका उन्होंने व्यापक प्रचार भी किया था। वह फिल्म मैंने भी मंगाकर देखी तो मुझे उससे बड़ी निराशा हुई। उसमें अनेक खामियाँ थीं। इस सम्बन्ध में 'आर्य लोक वार्ता' में मैंने धारावाहिक तीन अंकों में इस विषय पर सम्पादकीय लिखा था। वीरजी ने टंकारा में जहाँ फिल्म प्रदर्शन हो रहा था, इस मुद्दे को निर्भीकता से उठाया। अन्ततः फिल्म निर्माता अजय आर्य को अपनी भूल स्वीकार करनी पड़ी थी।

वीरजी ही वह व्यक्ति थे, जिनसे विगत सत्तर वर्षों तक मेरा निरन्तर सम्पर्क बना रहा, आर्य समाज सीतापुर के उत्सवों में लगभग हर बार उन्होंने मुझे आमंत्रित करने का प्रयास किया था। १९५७ में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में भाग लेने हेतु जब मैं जा रहा था, सीतापुर में एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन मेरे स्वागत में उन्होंने किया था। अभी दो वर्ष पूर्व जब हिन्दी सभा सीतापुर में डॉ.सुनील सारस्वत ने मुझे सम्मानित करने का कार्यक्रम रखा, तो अस्वस्थ होते हुए भी सीतापुर लालबाग पार्क में वे हिन्दी सभा भवन में आये और वे मुझे आर्य नगर स्थित नवीन आर्य समाज मंदिर दिखाने हेतु ले गये। वहाँ मैंने वीरजी के साथ आर्य समाज मंदिर के सामने चित्र भी खिंचवाया। गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' तथा मेरे पुत्र अमित वीर जी साथ में थे। उस समय उनमें युवकोचित उत्साह था। उन्होंने मुझसे वर्तमान प्रधान चौधरी रणवीर सिंह की इस संबन्ध में सराहना की, जिनके प्रयत्न पुरुषार्थ से यह नवीन आर्य समाज भवन तैयार हुआ।

वेदप्र॰ श॰ शर्मा

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०५

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश

आचार-अनाचार

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते॥

यह निश्चय है कि जैसे अग्नि में इन्धन और घी डालने से बढ़ता जाता है वैसे ही कामों के उपभोग से काम शान्त कभी नहीं होता किन्तु बढ़ता ही जाता है। इसलिये मनुष्य को विषयासक्त कभी न होना चाहिये।।3।।

वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्॥

जो अजितेन्द्रिय पुरुष है उसको 'विप्रदुष्ट' कहते हैं। उसके करने से न वेदज्ञान, न त्याग, न यज्ञ, न नियम और न धर्माचरण सिद्धि को प्राप्त होते हैं किन्तु ये सब जितेन्द्रिय धार्मिक जन को सिद्ध होते हैं।।4।।

वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा।
सर्वान् संसाधयेदर्थानक्षिण्वन् योगतस्तनुम्॥

इसलिये पांच कर्म पांच ज्ञानेन्द्रिय और ग्यारहवें मन को अपने वश में करके युक्ताहार विहार योग से शरीर की रक्षा करता हुआ सब अर्थों को सिद्ध करे।।5।।

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः।

न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः॥

जितेन्द्रिय उसको कहते हैं कि जो स्तुति सुन के हर्ष और निन्दा सुनके शोक; अच्छा स्पर्श करके सुख और दुष्ट स्पर्श से दुःख, सुन्दर रूप देख के प्रसन्न और दुष्ट रूप देख के अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करे दुःखित, सुगन्ध में रुचि और दुर्गन्ध में अरुचि नहीं करता।।6।।

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः।
जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्॥

कभी विना पूछे वा अन्याय से पूछने वाले को कि जो कपट से पूछता हो उसको उत्तर न देवे। उनके समान बुद्धिमान् जड़ के समान रहे। हां! जो निष्कपट और जिज्ञासु हों उनको विना पूछे भी उपदेश करे।।7।।

वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पंचमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्॥

एक धन, दूसरे बन्धु कुटुम्ब कुल, तीसरी अवस्था, चौथा उत्तम कर्म और पांचवीं श्रेष्ठ विद्या ये पांच मान्य के स्थान हैं। परन्तु धन से उत्तम बन्धु, बन्धु से अधिक अवस्था, अवस्था से श्रेष्ठ कर्म और कर्म से पवित्र विद्या वाले उत्तरोत्तर अधिक माननीय हैं।।8।।

(शेष पृष्ठ 3 पर....)

वेदांजलि

दाव मत लगा, परिश्रम से कमा-खा

❑पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अर्क्षर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।।
(ऋग्वेद : 10/34/13)

शब्दार्थ-

(अक्षैः) पासों से **(मा)** नहीं **(दीव्यः)** खेल, जुआ कभी मत खेल **(कृषिम)** खेती को **(इत्)** ही **(कृषस्व)** परिश्रम से कमा **(वित्ते)** परिश्रम से प्राप्त धन को **(बहु मन्यमानः)** अधिक महत्व देता हुआ उसी में **(रमस्व)** प्रसन्न, सन्तुष्ट रह। **(कितव)** हे जुआरि! **(तत्र)** इसी परिश्रम की कमाई में ही **(गावः)** गौ आदि सम्पत्ति है **(तत्र जाया)** इस श्रमार्जित धन में ही सब गृहस्थ सुख है **(तत्)** यह बात **(अर्यः)** न्यायकारी स्वामी **(अयं सविता)** प्रेरक प्रभु ने **(मे)** मुझे **(विचष्टे)** भली प्रकार दिखला दी है।

व्याख्या-

वैदिक संस्कृति में परिश्रम की कमाई को पवित्र माना गया है- ऐसी कमाई, जिससे देश की समृद्धि बढ़े और जो दूसरों के भरण-पोषण का भी आधार बने। खेती उसी प्रकार की जीविका की प्रतीक है। बिना परिश्रम के और अधिक मात्रा में आया धन एक-साथ समाज में असन्तुलन पैदा करता है। दूसरे, इस प्रकार की कमाई मांसाहार आदि व्यसनों को प्रोत्साहित करती है। विजयी बिना परिश्रम के अकल्पित धन पाकर व्यसनों में विनष्ट होता है और हारनेवाले का कुटुम्ब भूखों मरने पर विवश होता है। इस अभाव के कारण डाके, हत्या आदि अपराधों में लिप्त हो जाते हैं। महाभारत के समय में हुए द्यूतक्रीड़ा के परिणाम को भारत अबतक भोग रहा है।

इसलिए वेद ने इस कुत्सित कर्म का निषेध किया और श्रम से देश की समृद्धि को बढ़ानेवाले खेती जैसे कामों को करने का परामर्श दिया। जिस श्रम से देश का अभाव नहीं मिटता और समृद्धि नहीं बढ़ती, वह कमाई प्रशंसनीय नहीं है। परिश्रम के नाम पर तो भिखारी भी सारे दिन परिश्रम करता है, परन्तु उस श्रम के विनिमय में देश को कुछ नहीं मिलता, अतएव वह निन्दनीय एवं त्याज्य है।

श्रमार्जित थोड़े धन के लिए भी वेद ने कहा-**'रमस्व बहु मन्यमानः'**- तू श्रम से उस फल को पाकर प्रसन्न हो और थोड़े को भी अधिक मान! तेरी मानसिक सात्त्विकता और शान्ति के लिए यह कमाई झटके की लाखों की कमाई से कहीं अच्छी है।

इस पवित्र कमाई के लिए आवश्यक है कि जनता में धार्मिक संस्कार बद्धमूल हों। धर्म की जड़ में से जो अर्थ की शाखा फूटकर निकलेगी, उसमें स्वाभाविक रूप से धार्मिक संस्कार होंगे। ऐसी सात्त्विक और धार्मिक कमाई में यथाशक्ति दूसरों के अभाव की पूर्ति की भावना होगी।

देश को प्रगति के पथ पर डालने के लिए और समाज के स्वस्थ विकास के लिए गम्भीर चिन्तन, तथा समाज में प्रतिष्ठित और श्रेष्ठ समझे जानेवाले व्यक्तियों के आचरण और व्यवहार में परिवर्तन की आवश्यकता है। आज चारों ओर तड़क-भड़क और दिखावे का प्राबल्य है। प्रत्येक व्यक्ति शानदार कोठी, चमचमाती कार, बढ़िया फर्नीचर जुटाने के फेर में शीघ्र धन जमा करना चाहता है। वह समझता है कि इन वस्तुओं के आते ही मैं बड़ा बन जाऊँगा। यदि इसके विपरीत सच्चरित्र, सात्त्विक और सादा रहन-सहनवाले व्यक्तियों को सम्मान मिलने लगे और इन तड़क भड़क वालों की उपेक्षा होने लगे तो समाज में स्वस्थ वातावरण बनेगा।

आज दुर्भाग्य यह है कि देश में उच्च पदासीन व्यक्तियों के जीवन में से वह सादगी मिट गई है। कहाँ है आज सरदार पटेल की सी सादगी? सरदार पटेल की पुत्री मणिबेन ने अपने पिता की सेवा के विचार से संसार के सब सुखों को ठुकरा दिया। पिता के लिए भोजन बनाना, धोती कुर्ता आदि के लिए सूत कातना, अन्य भी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जुटे रहना और इसी में परम सन्तोष और प्रसन्नता का अनुभव करना यह था दृश्य स्वाधीन भारत के गृहमंत्री के गृह का।

भारत की स्वाधीनता के प्रारम्भिक काल में जो अन्तरिम सरकार बनी, उसमें डॉ.राजेन्द्र प्रसाद खाद्यमंत्री थे। अन्न की कमी उस समय भी थी। डॉ. प्रसाद ने अपने मंत्रित्व काल में खालिस गेहूँ की रोटी नहीं खाई। वे कहते थे-"जैसा अन्न मेरे देशवासियों को उपलब्ध है, मेरा कर्त्तव्य है कि मैं भी वैसे में ही निर्वाह करूँ।" राष्ट्रपति होते हुए भी उनका वही सादा बिहारी भोजन, चबैना और सत्तू था और नंगे पाँव घूमते रहते थे।

स्व.श्री महावीर त्यागी ने, जो संसद सदस्यता के समय सन् 68-69 में मीना बाग में मेरे पड़ोसी थे, एक दिन बातचीत के प्रसंग में सुनाया कि वे किसी काम से सरदार पटेल को मिलने गए। उनके सत्कार के लिए मणिबेन कुछ खाने पीने को लाईं। मणिबेन की धोती शिर पर फटी थी। यह देखकर श्री त्यागी ने, जैसाकि उनका विनोदी स्वभाव था, मणि बेन को कहा कि-"तुझे देखकर कौन भारत के गृहमंत्री की लड़की कहेगा? सड़क के किनारे पर बैठ जावे तो लोग भिखारिन समझकर पैसे फेंकने शुरू कर देंगे।" सरदार पटेल ने हंसते हुए कहा- "त्यागी कह तो ठीक ही रहा है। लगती तो मणिबेन ऐसी ही है।" मणिबेन ने कहा-"सब ठीक है, पिताजी की आवश्यकता निवृत्ति के बाद जो सूत बचता है, मुझे निर्वाह तो उसी में करना है।" इस दृश्य को देखकर और उच्च आदर्श की बात को सुनकर किसके मन में सादा जीवन के लिए आदर के भाव उत्पन्न न होंगे।

अतः भारत का उद्धार करना है तो उन पवित्र आदर्शों को अपने जीवन का अंग बनाना होगा।

इस पवित्र मंत्र में उसी भोग-लिप्सा को त्यागकर ऋषि जैसे पवित्र साधनों से स्वयं निर्वाह करते हुए और देश की आवश्यकता पूर्ति में सहायक बनकर अपने जीवन को सफल बनाने का परामर्श है।

("श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द ३४-३६

कथं नु रक्षेद्धि जनानुपासकान्,
स्वमूर्तिरक्षां विहितुं न यः क्षमः।
अतश्च नैषो हि शिवः प्रतीयते,
विचारयामास यथार्थतो बुधः।।

जो अपनी मूर्ति की रक्षा करने में भी समर्थ नहीं है वह अपने उपासक व्यक्तियों की रक्षा कैसे करेगा। 'अतः निश्चय ही यह शिव प्रतीत नहीं होता है'-ऐसा उस बुद्धिमान् ने यथार्थ रूप से विचार किया।

स पितृदेवं प्रतिबोधयन् सुधीः,
निवेदयामास विचारमात्मनः।
ब्रवीतु हे तात! सुनिश्चितं द्रुतम्,
अयं शिवः किं भवता सुवर्णितम्।।

उस उत्तम बुद्धि वाले ने अपने देवतुल्य पिता को जगाते हुए उनके समक्ष अपने विचार का निवेदन किया और कहा-'हे पिता! आप मुझे शीघ्र ही निश्चित करके बताएँ कि-क्या ये वे ही शिव हैं जिनका आपने मुझसे वर्णन किया था?

य आत्मरक्षां विदधातुमप्रभुः,
कथं स मान्यो ननु भो जगत्प्रभुः।
करोति किंचिन्न तु भाषते हि यो,
निपीड्यमानोऽपि च तुच्छजन्तुना।।

जो अपनी रक्षा करने में भी समर्थ नहीं है उसको जगत् का प्रभु कैसे माना जा सकता है? और जा एक तुच्छ जन्तु द्वारा निपीड़ित होने पर भी न कुछ कर ही रहा है और न बोल रहा है।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

पूजा और उपासना में क्या अन्तर है? कृपया स्पष्ट करें।

-प्रत्यूष रत्न पाण्डेय, प्रधान, आर्य समाज, लाजपतनगर, चौक, लखनऊ

समाधान :

पूजा और उपासना दोनों ही भक्ति के प्रमुख अंग हैं और पंच महायज्ञों के अन्तर्गत दोनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जहाँ तक अन्तर की बात है, निम्नांकित बिन्दु ध्यान रखने योग्य हैं:

उपासना- ब्रह्मयज्ञ है और पूजा देवयज्ञ है। स्तुति, प्रार्थना, उपासना- तीनों ही ब्रह्मयज्ञ के प्रमुख तत्त्व हैं। उपासना में सन्ध्योपासन भी महत्त्वपूर्ण है। उपासना शब्द उप+आसन दो शब्दों से मिलकर बनता है। 'उप' अर्थात् समीप और 'आसन' अर्थात् स्थित होना। जब ध्यानावस्थित होकर हम परमात्मा के सन्निकट अपने को संस्थित करते हैं अर्थात् उसे अपने हृदय मन्दिर में प्रतिष्ठित करते हैं, तो वह उपासना होती है। उपासना की पूर्णता हेतु स्तुति और प्रार्थना आवश्यक है। स्तुति में परमेश्वर के गुणों का गायन अथवा ध्यान स्मरण होता है। प्रार्थना में परमात्मा से हम विनीत होकर याचना करते हैं। 'विश्वानि देव' से लेकर 'अग्ने नय सुपथा' तक स्तुति प्रार्थना उपासना हेतु महर्षि ने आठ वेदमंत्रों का विशेषतः चयन किया है।

पूजा- देवयज्ञ है। देवयज्ञ में अग्निहोत्र (यज्ञ, हवन) का स्थान है। यज्ञ को देवपूजा भी कहा गया है, इसमें जो दानशील हैं, 'दानाद्वा...' हमें बहुत कुछ देते रहते हैं, ऐसे तत्त्वों को 'देव' कहा जाता है। अग्निहोत्र में यज्ञकर्त्ता देवों का सत्कार करता है और स्वयं भी देवकोटि में आ जाता है। तेंतीस कोटि (श्रेणियाँ) देवताओं की प्रसिद्ध हैं किन्तु माता, पिता, अतिथि, आचार्य भी देव माने गये हैं। वेदमंत्रों में भी देवता होते हैं। सभी का सत्कार करना 'पूजा' कहलाती है।

पूजा और उपासना दोनों में अन्य विशेष अन्तर यह है कि पूजा तो देवी, देवताओं, माता, पिता, आचार्य इत्यादि की होती है। पंचायतन पूजा का विधान जहाँ पर ऋषिवर ने किया है, वहाँ पति के लिए पत्नी तथा पत्नी के लिए पति को भी देवता (पूज्य) माना है। किन्तु उपासना मात्र परमेश्वर की होती है। उपास्य देव केवल और केवल परब्रह्म परमेश्वर है। यह बात महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने बार बार प्रतिपादित की है। सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में महर्षि ने जोर देकर तथ्य प्रतिपादित किया है।

ब्रह्मयज्ञ में सन्ध्या, स्वाध्याय, सत्संग इत्यादि द्वारा उपासना का विधान है जबकि देवयज्ञ में अग्निहोत्र को महत्त्व दिया गया है। **-सम्पादक**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

'मानस' में .....

विषाणुओं से बचाव के लिए सतत प्रयत्न करने का निर्देश दिया गया है।

ऐसे घातक विषाणुओं को उत्पन्न करने वाले जीवों की छः श्रेणियाँ हैं-

(१)असित- श्याम वर्ण तथा अंधकार में रहने वाले जीव। (अथर्व.३/२७/१)

(२)तिरश्चिराजि- ऐसे जिनकी गति उल्टी/विपरीत होती है। (अथर्व.३/२७/२)

(३)पृदाकु- भयानक शब्द करने वाले अशोभनीय जीव। (अथर्व.३/२७/३)

(४)स्वज- स्वयं उत्पन्न होने वाले असाध्य रोगों के जनक। (अथर्व.३/२७/४)

(५)कल्माषग्रीव- पापाविष्ट कल्मष रोगों को उत्पन्न करने वाले, डरावनी ग्रीवा वाले। (अथर्व.३/२७/५)

(६)श्वित्र- वृद्धि को प्राप्त करने वाले संक्रमणशील। (अथर्व.३/२७/६)

गौरतलब है कि भयप्रद शब्द करने वाले पापाविष्ट, अश्लील, अशोभनीय, उल्टे लटकने वाले सभी लक्षण चमगादुरों में खासतौर पर पाये जाते हैं। वेदों में कल्माषग्रीव, पृदाकु और तिरश्चिराजि जैसे विशेषण इन्हीं के लिए प्रयुक्त हैं, ऐसे प्रतीत होता है।

अतः चमगादुरों द्वारा 'कोरोना' नामक घातक वायरस तैयार करने का जो आरोप चीन पर आज लगाया जा रहा है, वह निराधार नहीं है। वेदमंत्रों में वर्णित सभी लक्षण 'चमगादुरों' में मौजूद हैं। तांत्रिक साधना वाले वाममार्गी भयप्रद वातावरण बनाने में इनका उपयोग करते रहे हैं। अतः इनसे सजग रहने की जरूरत है। तथा निरन्तर अनुसंधान करते हुए वैज्ञानिकों को इन वायरसों से बचाव का उपाय खोजते रहना चाहिए। चेचक, प्लेग, कोरोना की तरह अन्य इसी श्रेणी के वायरस भी भविष्य में तैयार किये जा सकते हैं और जो देश मानव जाति को विनष्ट करना चाहते हैं वे इनका उपयोग कर सकते हैं। उपर्युक्त वेदमंत्रों में इनके लिए 'रक्षिता' शब्द का प्रयोग किया गया है अर्थात् इनसे अपने को रक्षित करने या बचाने की जरूरत है तथा इस संबन्ध में मनुष्य को ईश्वर की शरण में भी जाने से नहीं हिचकना चाहिए। परमेश्वर इनसे हमारी रक्षा कर सकता है। इन छः मंत्रों में बार-बार प्रयुक्त 'योऽस्मान् द्वेष्टियं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः' का यही अभिप्राय है।

सगुणनिर्गुणस्तुतिप्रार्थनोपासना

"जो-जो गुण परमेश्वर में हैं उन से युक्त और जो-जो गुण नहीं हैं उन से पृथक् मान कर प्रशंसा करना सगुणनिर्गुण स्तुति, शुभ गुणों के ग्रहण की ईश्वर से इच्छा और दोष छुड़ाने के लिये परमात्मा का सहाय चाहना सगुणनिर्गुण प्रार्थना और सब गुणों से सहित सब दोषों से रहित परमेश्वर को मान कर अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना सगुणनिर्गुणोपासना कहाती है।"

-'सत्यार्थ प्रकाश', उपसंहार-५१'

इसका फल-जैसे शीतातुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर का सामीप्य प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। अतः ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे इसका फल पृथक् होगा। परन्तु आत्मा का वल इतना बढ़ेगा, वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबायेगा और सबको सहन कर सकेगा। *-दयानन्द सरस्वती*

व्यक्ति-विशेष

आध्यात्मिक क्रान्ति के जनक

पं. हरिओम शर्मा 'हरि'

लखनऊ के साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षिक क्षितिज के सर्वाधिक प्रकाशमान प्रभामंडल का नाम है- पं.हरिओम शर्मा 'हरि'। जीवन के ६६ वसन्त देख चुके शर्मा जी समय की शिलाओं पर अपनी स्वर्णिम रेखाएँ अंकित करने वाले शिक्षा संस्थान सिटी मांटेसरी स्कूल के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी हैं और उक्त संस्था के अभ्युदय और विकास विन्यास के श्रेय के भागीदार हैं, इतना ही नहीं शिक्षाविद् श्री जगदीश गाँधी के हृदय की धड़कनों के कितने करीब हैं- इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि प्रतिवर्ष लखनऊ मोती महल पार्क में आयोजित होने वाले बृहद् पुस्तक मेले में साहित्यिक मंच पर जब जब शर्मा जी की सद्यः प्रकाशित पुस्तकों के विमोचन का समारोह होता है और उसमें शामिल होने के लिए श्री जगदीश गाँधी का पदार्पण होता है तो बैंड बाजे के साथ एक सम्राट की तरह होता है। यह दृश्य देखते ही बनता है।

पत्रकारों पर अपना प्रभाव रखने वाले शर्मा जी एक उच्च कोटि की सूझबूझ वाले व्यवस्थापक हैं। भारत एवं विश्व की अनेक महान् विभूतियों द्वारा प्रशंसित एवं समादृत १५ कृतियाँ लोकसंग्रह के प्रतिमानों पर खरी उतरती हैं।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के कथनानुसार-

केवल मनोरंजन न कवि का, कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी, मर्म होना चाहिए।।

देश का सौभाग्य होगा, यदि शर्मा जी की इन कृतियों को पाठ्यक्रम के विभिन्न स्तरों पर स्वीकृत करके छात्र-छात्राओं को उनसे लाभान्वित होने का अवसर प्रदान किया जा सके। नई पीढ़ी के जीवन को आत्मविश्वास की गरिमा से समृद्ध करने का इससे उत्तम उपाय और कोई नहीं हो सकता।

तेजस्वी मुखमंडल से युक्त शर्मा जी की गौरववर्णी स्थूल काया में युवकोचित स्फूर्ति और ऊर्जा विराजती है। लेकिन यह सब ऊपरी बातें हैं- शर्मा जी के आन्तरिक व्यक्तित्व का एक अन्य आयाम भी है- 'क्वचिदन्यतोपि' वह वाक्यांश है जिसका गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के प्रारंभ में उल्लेख किया है। वह 'क्वचिदन्यतोपि' ही मुझे इन पंक्तियों को लिखने हेतु प्रेरित कर रहा है। युगावतार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने विश्व विश्रुत ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में जहाँ शिक्षा का व्याख्यान किया है- 'अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामः'- तो सबसे पहले जो सूक्ति उद्घृत की है वह है 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'। शतपथ ब्राह्मण की इस सूक्ति के आधार पर महर्षि दयानन्द ने 'मातृदेवो भव पितृदेवो भव' को मान्यता देकर पंचमहायों में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। इस उद्घोषणा की उपेक्षा तो सर्वत्र है किन्तु अगर किसी ने इस सांस्कृतिक सूक्ति को क्रियात्मक रूप दिया तो वह है पं.हरिओम शर्मा 'हरि'।

प्रायः किसी भी साहित्यिक आयोजन का शुभारम्भ सरस्वती, गणेश, शिव, विष्णु अथवा ईश वंदना से होता है, किन्तु पं.हरिओम शर्मा 'हरि' वह व्यक्ति हैं, जिनके प्रत्येक आयोजन का शुभारम्भ माता-पिता की वंदना और आरती से होता है। प्रज्वलित दीप सहित माता-पिता के बृहद् चित्र पर माल्यार्पण एवं थाल सजाकर आरती गायन होता है। आरती गायन के प्रारंभिक बोल हैं-

आरती कीजै मात-पिता की,
पूजा कीजै मात-पिता की,
जिनकी कृपा से बड़े हुए हैं,
जिनकी कृपा से खड़े हुए हैं,
माँ ने हमको जन्म दिया है,
दूध पिलाकर बड़ा किया है,
बड़े प्यार से पाला हमको,
हमको जीवन दान दिया है।
आरती कीजै मात-पिता की...

यह आरती गायन उनकी सद्यः प्रकाशित पुस्तक '१२ महीने ३६५ दिन' में भी कवर पृष्ठ पर अंकित है। गणश जी ने पूर्वकाल में माता की परिक्रमा कर विश्व विजय का पुरस्कार जीत लिया था उसी परम्परा में शर्मा जी ने इस नवीन परम्परा की शुरूआत करके अपने सत्साहस, सत्संकल्प और दृढ़ आत्मविश्वास के बल पर विश्वविजय प्राप्त की है। धन्य हैं- प्राचार्य श्री मिहीलाल शर्मा व श्रीमती रेशम देवी; जिन्होंने २० अगस्त १९५४ को अलीगढ़ के छोटे से गाँव में एक बालक को जन्म दिया- जिसका नाम रखा-'हरिओम', जो आज एक आध्यात्मिक क्रान्ति का जनक है।

शर्मा जी के आस्थाशील मानस का एक और अनुष्ठान है, जो अनुपम है, वंदनीय है, अनुकरणीय है। कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित होकर शर्मा जी ने उन्हें मातृपद का सम्मान ही नहीं दिया, वरन् उसे व्यवहार में भी परिणत कर दिखाया है, वे रमा जी को वही सर्वोच्च स्थान देते हैं, जिसकी अधिकारिणी माता होती है। उनके सभी आयोजनों की रमा जी ही अध्यक्षता करती हैं, या मुख्य अतिथि होती हैं। रमा जी का अग्रज (बड़ा भाई) होने के नाते वे कभी कभी मुझे भी याद करते हैं-

'गगन चढ़इ रज पावन प्रसंगा'

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' (जनवरी '२१) मिला। अपने साक्षात्कार को मुखपृष्ठ पर

प्रकाशित देखकर खुशी हुई। कृपया मेरा हार्दिक धन्यवाद और आभार स्वीकार कीजिये। मैं मीडिया विशेषज्ञ, वृत्तचित्र निर्माता, फिल्म निर्देशक और लेखक-पत्रकार श्री संजय माथुर जी का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी अति व्यस्त दिनचर्या के बहुमूल्य समय को लगाकर इस कार्य को सम्पन्न किया। संजय जी ने न केवल अपने सटीक प्रश्नों से मुझसे वह बहुत कुछ कहलवा लिया जो सार्थक और आवश्यक था, वरन् उस पत्रकारिता के उच्च मानदंडों के अनुरूप प्रस्तुत भी कर दिया। इस संदर्भ में 'आर्य लोक वार्ता' के सुधी पाठकों से मेरा एक विशेष निवेदन है कि संजय जी के दूसरे प्रश्न के उत्तर में छपी पहली पंक्ति "मैं वेदों से बिलकुल अपरिचित था" के स्थान पर "मैं वेदों से बिलकुल अपरिचित नहीं था" पढ़ें। मुद्रण की यह छोटी सी त्रुटि अर्थ का अनर्थ कर रही है। वैसे इस अंक का मुख्य आकर्षण तो "धारावाहिक उत्तर रामायण और मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम" शीर्षक सम्पादकीय है, जिसके लिए आदणीय डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी को धन्यवाद और बधाई देना मैं अनिवार्य समझता हूँ। अन्य सभी स्तम्भ, कविताएँ, समाचार आदि सदा की भाँति पठनीय और महत्त्वपूर्ण हैं ही। कोरोना-काल के बाद 'आर्य लोक वार्ता' का प्रकाशन पुनः प्रारम्भ होने पर आर्य लोक वार्ता परिवार के समस्त सदस्यों को बधाई!

-अमृत खरे

2/90, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226 010

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी '२१,

अंक-१ का अवलोकन किया। इसके मुखपृष्ठ पर विगत तेईस वर्षों से अनवरत वैदिक मंत्रों का हिन्दी काव्यानुवाद प्रस्तुत करने वाले अध्यात्म-चेता सुकवि श्री अमृत खरे के साथ श्री संजय माथुर की महत्त्वपूर्ण वार्ता के महत्त्वपूर्ण अंश को प्रकाशित किया गया है। श्री अमृत खरे ने वेदमंत्रों के अनुवाद से संबन्धित कठिनाइयों-समस्याओं का गंभीरतापूर्वक सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत किया। निष्कर्षतः यह स्पष्ट किया गया कि यद्यपि इन मंत्रों का हिन्दी काव्यान्तरण उनके भाव को सुगम और सुबोध बनाने में तो समर्थ है, किन्तु इन मंत्रों के त्रिस्तरीय के जो अर्थ व्यंजित होते हैं, उनकी तद्वत् प्रस्तुति संभव नहीं। अतएव मंत्रों का सम्यक् लाभ प्राप्त करने के लिए उनका मूलपाठ ही उपादेय है। अनुवाद से वैसा प्रभाव समग्रतः सम्भव नहीं। इसके पश्चात् इस अंक का संपादकीय, पूर्व अंकों की भांति ही विचारोत्तेजक है, मननीय है। विद्वान् संपादक डॉ.आर्य ने 'वाल्मीकि रामायण' में सम्मिलित विभिन्न प्रक्षिप्तांशों की असलियत बखूबी उजागर की है। विशेषतः लोक प्रचलित प्रसंग 'सीता-परित्याग' जिसका प्रसारण रामानंद सागर द्वारा टी.वी. पर किया गया, सर्वथा चिन्त्य है। उत्तर रामायण की इस घटना द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के उदात्त आदर्श चरित्र को लांछित/कलंकित करने का निन्दनीय प्रयास किया गया है। इसी प्रकार लक्ष्मण जैसे सेवा-भाव के आदर्श लक्ष्मण को श्रीराम द्वारा मृत्युदंड दिये जाने की घटना भी साजिशपूर्ण और रावण-वध के बाद राम पर 'ब्रह्म हत्या' जैसा आरोप भी। उक्त प्रसंगों की सचाई को संपादक ने सप्रमाण उजागर किया है। वास्तव में ऐसे अंश रामायण में बाद में जोड़ दिए गये और हमारे महत्त्वादर्श पर कीचड़ उछालने का घृणित कार्य किया गया। ऐसे सत्य-शोधक कार्य के लिए सम्पादक बधाई का पात्र है। मेरा निश्चित मत है कि इस अंक का सर्वाधिक प्रेरक अंश इसका संपादकीय है। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०४' का प्रकाशित अंश हमें शास्त्र सम्मत श्रेष्ठ आचार की शिक्षा देता दिखलाई पड़ता है, जो आज लुप्त-प्राय है। 'धनार्जन का सत्परामर्श' शीर्षक से पं.शिवकुमार शास्त्री जी ने सचाई, ईमानदारी, परिश्रम और नम्रता सहित धनार्जन को उपयोगी एवं कल्याणकर बतलाया है क्योंकि भ्रष्टाचरण द्वारा अर्जित सम्पत्ति अन्ततः कष्टप्रद सिद्ध होती है। 'दयानन्द चरितम्' (महाकाव्य) के उद्धृत छंद (अर्थ सहित) स्वामी दयानन्द सरस्वती की विलक्षण चेतना के प्रतीक हैं। 'शुभाकांक्षा' के अन्तर्गत विभिन्न पाठकों द्वारा व्यक्त विचार सर्वथा प्रेरणास्पद हैं। 'आर्य संस्कृति के मूल तत्त्व' धारावाहिक-४ में डॉ.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी द्वारा प्रस्तुत कर्म-सिद्धान्त की गहन तात्विक विवेचना है, जो मननीय और आचरणीय है। व्याख्यानमाला-६ 'शंकर और दयानन्द' की समता और विषमता विषयक है, जिसमें महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती ने प्रकारान्तर से बड़े उपयोगी संदेश दिए हैं। 'काव्यायन' में रत्नाकर, प्रसाद की रचनाओं का कहना ही क्या, श्रीयुत् ब्रजेश, अबोध, हर्ष, रमा आदि की रचनाएँ भी रोचक और प्रेरक हैं। अतंतः आर्य समाज के जनपदीय आयोजनों, विशिष्ट समाज सेवियों आदि का परिचय देकर इस अंक को अधिक आकर्षक बना दिया है। ऐसी सुन्दर, स्तरीय, पठनीय सामग्री से सम्पन्न 'आर्य लोक वार्ता' के अंक की प्रस्तुति हेतु हार्दिक बधाई!

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

78, त्रिवेणी नगर-1, लखनऊ

***

कोरोना के दुखदायी बादल कुछ छँटते

हुए दृष्टिगोचर हुये उसका पुनरागमन न हो इस हेतु वैक्सीन भी तैयार हो गई। इस मध्यावधि में अनेक गतिविधियाँ बन्द हो गई थीं; किन्तु अब प्रगति के पग पुनः गतिमान हो रहे हैं। परिस्थितियों के वशीभूत 'आर्य लोक वार्ता' का प्रकाशन भी प्रभावित हुआ। जैसे रात्रि के सघन तमजाल में बन्द पड़ा कमल प्रभात की प्रथम रश्मि का अवलोकन कर प्रस्फुटित हो अपनी सुन्दरता बिखेर देता है ठीक उसीप्रकार कोरोना के आतंक का समापन विचारते हुए 'आर्य लोक वार्ता' ने अपना जनवरी २०२१ अंक नवीन साज सज्जा से युक्त जन समाज को भेंट किया है।

बहु प्रतीक्षित अंक अपने आंचल में ढेर सारी ज्ञान-सामग्री संजोए हुये है। 'काव्यायन' में कालजयी रचना 'प्रसाद' जी के महाकाव्य 'कामायनी' से प्रलय पश्चात पुनर्सृष्टि के प्रथम-प्रभात की झांकी प्रस्तुत करता मानों यह संकेत दे रही है कि कोरोना की आतंक-प्रलय के पश्चात पुनः संसार में कार्य-व्यापार सृष्टि का उदय हो रहा है। रचना तत्कालीन दृष्टिकोण से सामयिक है।

जगन्नाथ दास 'रतनाकर' के 'उद्धव शतक' से उद्धृत तीन कवित्त घनाक्षरी छन्द भी अपना काव्यगत सौष्ठ विखेरने में पूर्ण सक्षम हैं, तथा सर्व सामान्य को मुग्ध करने में कोई कोर कसर छोड़ नहीं रहे हैं। श्रीमती रमा आर्य 'रमा' ने अपना परिचय १६+१४=३० मात्राओं के ककुभ छन्द में दिया है जिसमें उनके सभी प्रकाशित आठो ग्रन्थों के नाम आ गये हैं। यहाँ उनका काव्यकला कौशल सराहनीय है।

सम्पादकीय में उत्तर राम चरित्र को बड़े ही अकाट्य तर्कों से नकारा गया है। उत्तर राम चरित्र वास्तव में कुछ सिरफिरे लोगों द्वारा क्षेपक रूप में अलग से जोड़ दिया गया है जो वास्तविकता से परे है। अंक का मुख्य आकर्षण है मुखपृष्ठ पर प्रकाशित श्री अमृत खरे जी का श्री संजय माथुर द्वारा लिया गया साक्षात्कार। अमृत खरे परम विद्वान एवं वरिष्ठ कवि हैं, जो लगातार २३ वर्षों से 'विनय पीयूष' शीर्षक स्तंभ की बागडोर संभाले हुए हैं। उन्होंने बड़े ही सरल शब्दों में संजय माथुर जी के प्रश्नों का उत्तर देकर समझाया है। एक भाषा से दूसरी भाषा में वह भी काव्यानुवाद वास्तव में बहुत ही कठिन कार्य है, जिसे अमृत खरे जी बखूबी संभाल रहे हैं। उन्होंने आरम्भिक परिस्थितियों के कच्चे चिट्ठे का सम्यक दर्पण सामने रख दिया है जिससे कि पाठक स्वयं ही अवगत हो जायेगा कि यह कार्य कितना गहन था। इस अंक में उन्होंने ऋग्वेद १/२३/२२ मंत्र का काव्यानुवाद 'आचरण के चरण' शीर्षक से किया है और काव्यानुवाद में भावों की झाँकी सम्मुख प्रस्तुत कर दी है। अन्य लेख व समाचार भी पठनीय हैं। इस अंक हेतु सम्पादक जी को बहुत-बहुत बधाई!

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-3

***

'आर्य लोक वार्ता' वर्ष-२३, अंक-१

पढ़कर प्रसन्नता हुई। पृष्ठ ७ पर जहाँ मेरी पुस्तक 'मन आंगन आकाश पराया' के विमोचन का समाचर छपा है, उसमें मुख्य अतिथि पं.हरिओम शर्मा 'हरि' का नाम छपने से रह गया है। भ्राताजी डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सूचित किया है कि वे हरिओम शर्मा 'हरि' का नाम समाचार के शीर्षक में सबसे ऊपर रखना चाहते थे, जो छपने से रह गया है। उक्त अंक में सबसे बड़ा आकर्षण है, संजय माथुर और अमृत खरे की वार्ता। निश्चय ही अमृत जी का वेदमंत्रों का काव्यानुवाद साहित्य की महानतम सम्पत्ति है।

काव्यायन, शुभाकांक्षा, सत्यार्थ प्रकाश वार्ता, वेदांजलि, जिज्ञासा-समाधान तथा महत्त्वपूर्ण कृतियों के धारावाहिक प्रकाशन से 'आर्य लोक वार्ता' में अद्भुत निखार आया है। यही कारण है कि विज्ञापन रहित होकर भी यह पत्र गत २३ वर्षों से अनवरत प्रकाशित है और पाठकों का हार्दिक स्नेह-सहयोग इसे प्राप्त हो रहा है।

-रामा आर्य 'रमा'

नेवाजगंज, चौक, लखनऊ-226003

***

अक्षर लोक

अमृत की ओर (स्वाध्याय ग्रन्थ)
लेखक : पं.सुरेश जोशी 'वैदिक प्रवक्ता'
प्रस्तुति : पेपर बैक/पृष्ठ संख्या १६०
मूल्य : पचास रुपये
प्रकाशक : आर्यावर्त साधना सदन, पटेल नगर, नया दशहरा बाग, बाराबंकी—२२५००१

'अमृत की ओर' वस्तुतः आध्यात्म से परिचय कराने वाला स्वाध्याय ग्रन्थ है।

पं.सुरेश जोशी लिखते हैं कि जब आपका मन सतोगुणी हो, जब आपको ज्ञान की भूख जगे, जब आपका मन दुःखी हो, जब आप सोचें- संसार क्या है? किसने बनाया? जब आप सोचें- आत्मा क्या है? जब आप मृत्यु को जानना चाहें, जब आप अपनों से दुःखी होने लगें, जब आप में हीन भावना जगे, जब आप कुछ पाने की सोचें तब आप 'अमृत की ओर' पुस्तक को पढ़ें। आपको आनन्द मिल जायेगा।

वास्तव में आध्यात्म का पथिक संसार के मायावी बन्धनों को काटकर 'मुक्ति' की ओर बढ़ता हुआ व्यक्ति होता है। वह जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता है, उसका आनन्द बढ़ता जाता है। 'अमृत की ओर' जैसे ग्रन्थ आध्यात्म के पथिक के लिये पथप्रदर्शक की तरह होते हैं, इसलिये पं.सुरेश जोशी के दावे में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं दीखती।

यह ग्रन्थ चार अध्यायों में विभक्त है। पहले अध्याय 'तीन अनादि पदार्थ' में विस्तार से ईश्वर, जीव और प्रकृति का विवेचन किया गया है। दूसरे अध्याय में तर्कों, उदाहरणों और उद्धरणों के माध्यम से सिद्ध किया गया है कि 'शरीर मरणधर्मा है'। तीसरे अध्याय में 'आत्मा के स्वरूप' को स्पष्ट किया गया है और अन्तिम चौथे अध्याय में 'ईश्वर सिद्धि' के उपाय बताये गये हैं।

'अमृत की ओर' ग्रन्थ की भाषा सहज-सरल है और शैली 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी विवेचनात्मक, उद्धरणों से पुष्ट, तर्क सम्मत और अधिकांश प्रश्नोत्तरात्मक है। ग्रन्थ का मुद्रण साफ-सुथरा है। मूल्य बहुत कम है। इससे पता चलता है कि प्रकाशन का उद्देश्य वास्तव में सात्विक है।

'अमृत की ओर' प्रस्थान करने वाले जिज्ञासुओं के लिये 'अमृत की ओर' ग्रन्थ सचमुच सहारा बनने की सामर्थ्य रखता है।

विदेशी विद्वानों की दृष्टि में हिन्दी रचनाकार
लेखक : जगदीश प्रसाद बरनवाल 'कुन्द'
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड/पृष्ठ संख्या: २६२
मूल्य : रु.४०० $25 और £12
प्रकाशक : मेधा बुक्स, एक्स—११, नवीन शाहदरा, दिल्ली—११० ०३२

'विदेशी विद्वानों की दृष्टि में हिन्दी रचनाकार' एक शोध परक सन्दर्भ ग्रन्थ है। स्पष्ट है कि इसमें उन हिन्दी रचनाकारों का उल्लेख है जो विदेशी विद्वानों की दृष्टि में आये और उन विदेशी विद्वानों का ज़िक्र है जिन्होंने हिन्दी रचनाकारों और उनके लेखन पर दृष्टि डाली।

भारतीय साहित्यकारों में चन्दबरदायी, विद्यापति, कबीर, जायसी, सूर, मीरा, तुलसी, केशवदास, बिहारी, घन (आनन्दघन/घनानन्द), भारतेन्दु, प्रेमचन्द, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर, मुक्तिबोध और रेणु पर लेखक 'कुन्द' को विस्तृत सामग्री प्राप्त हुई और उन्होंने उन पर और उनके साहित्यिक योगदान पर शोधपरक सन्दर्भ लेख लिखे हैं। बहुत से ऐसे भारतीय लेखक-कवि थे जिन पर विदेशी विद्वानों ने उड़ती-उड़ती दृष्टि डाली है या जिनके बारे में 'कुन्द' जी को संक्षिप्त सामग्री ही प्राप्त हो सकी। इन पर लिखी 'टिप्पणियाँ' भी महत्त्वपूर्ण बन पड़ी हैं। अच्छी बात यह रही कि लेखक वाग्जाल और अलंकृत भाषा से बचते हुए तथ्यों को 'सूचीबद्ध' सा करता चला और ग्रन्थ के लेखन के उद्देश्य के साथ पूरा न्याय कर सका। पुस्तक का मुद्रण निर्दोष है और साज-सज्जा आकर्षक व गौरवपूर्ण है।

हिन्दी भाषा और साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए 'विदेशी विद्वानों की दृष्टि में हिन्दी रचनाकार' ग्रन्थ पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है।

मन आंगन आकाश पराया (काव्य—संग्रह)
कवयित्री : रामा आर्य 'रमा'
प्रस्तुति : पेपर बैक/पृष्ठ संख्या १६०
मूल्य : तीन सौ रुपये
प्रकाशक : सागर संस्कृति—साहित्यिक संस्थान मातृश्री, ४१७/१०४४, निवाजगंज, चौक, लखनऊ—२२६००३

'मन आंगन आकाश पराया' सिद्ध कवयित्री रामा आर्य 'रमा' का नवीनतम काव्य-संग्रह है। यह 'अनुग्रह', 'अनुभूति', 'अनुराग', 'अनायास' और 'अभिव्यक्ति' शीर्षक पांच खण्डों में विभक्त है। स्पष्ट है कि प्रत्येक खण्ड में शीर्षक के अनुरूप रचनाएँ संग्रहीत हैं।

खड़ी बोली हिन्दी और अवधी में ढले काव्य-संग्रह के भजन, गीत, गज़ल, देशगान आदि 'रमा' जी के जाने-माने व्यक्तित्व और कृतित्व के अनुरूप सहज, सरल, निश्छल और हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं। इनमें अपने मन के आंगन के कोने-कोने को भावुक-भाव से टटोला गया है, तो पराये पराये आकाश के ओर-छोर को भी ईमानदारी से नापने का प्रयास किया गया है।

'मन आंगन आकाश पराया' की कविताओं में जिजीविषा और जिगीषा, दोनों के दर्शन एक ही धरातल पर पाये जाते हैं। वस्तुतः काव्य-संग्रह की सुन्दर और सार्थक रचनाओं में कवयित्री की अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ, संसार की विडम्बनाएं और व्यक्ति और समाज की पीड़ाएं तथा कुछ कर गुजरने की छटपटाहटें एक साथ पूरी शिद्दत के साथ फूट पड़ी हैं। आह्लाद के स्वर भी कम नहीं हैं। सहज और स्वतः स्फूर्त।

पुस्तक का प्रकाशन साफ-सुथरा और आकर्षक बन पड़ा है। निश्चित ही 'मन आंगन आकाश पराया' सुधी पाठकों को आकर्षित करेगा और खूब भायेगा भी!

धारावाहिक-15 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

पत्थर से टक्कर होगी तो चोट लगेगी, आग में हाथ पड़ेगा तो झुलस जायगा, पानी में कपड़ा गिरेगा तो गीला अवश्य होगा--यह निर्दय, निर्मम कार्य-कारण का नियम विश्व का संचालन कर रहा है। इस नियम से ही सूर्य उदय होता है, चन्द्र अपनी रश्मियों का विस्तार करता है, पृथिवी अपनी परिधि पर घूमती है, समुद्र में ज्वार-भाटा आता है। 'अवश्यंभाविता' कार्य-कारण के नियम की आत्मा है--कारण का कार्य अवश्यंभावी है, उसे टाला नहीं जा सकता।

'अवश्यंभाविता' कार्य-कारण का नियम एक 'चक्र' में चलता चला जाता है। कारण कार्य को उत्पन्न करता है, वह कार्य फिर कारण बन जाता है, अपने से अगले कार्य को उत्पन्न कर देता है--और इस प्रकार प्रत्येक कारण अपने से पिछले का कार्य और अगले का कारण बनता चला जाता है, और यह प्रवाह सृष्टि का अनन्त-प्रवाह बन जाता है। बीज वृक्ष को उत्पन्न करता है, वही वृक्ष फिर बीज को उत्पन्न कर देता है, वह बीज अगले वृक्ष का जन्म देता है, और यह परम्परा अनन्त की ओर मुख किये आगे-ही-आगे बढ़ती चली जाती है।

कर्म में ^अवश्यंभाविता' तथा ^चक्रपना'-

क्योंकि 'कर्म' का सिद्धान्त 'कार्य-कारण' का ही सिद्धान्त है, इसलिये कर्म में भी कार्य-कारण की दोनों बातें--'अवश्यंभाविता' तथा 'चक्रपना' पायी जाती हैं। प्रत्येक कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है--यह 'अवश्यंभाविता' है, प्रत्येक कर्म का फल, फल न रहकर, स्वयं एक कर्म बन जाता है, ऐसा कर्म जिसका फिर आगे फल मिलता है--यह 'चक्र' है। कर्म का 'चक्र' कैसे चलता है? हमें किसी ने मारा। उसका हमें यह मारना या 'फल' है, या 'कर्म' है, या 'कार्य' है, या 'कारण' है। अर्थात्, या तो यह किसी पिछले कर्म का हमें 'फल' मिला है, या जिसने हमें मारा उसने एक नया 'कर्म' किया, एक नया कारण उत्पन्न किया जिसका उसे आगे फल मिलना है। अगर हमें 'फल' मिला है तो यह किसी कारण का 'कार्य' है, और अगर हम थप्पड़ खाकर चुप रह जायं, गुस्सा तक न करें, तो यह 'फल' शान्त हो जाय, और अगली कार्य-कारण-परंपरा को खड़ा न करे। परन्तु ऐसा नहीं होता। हमें किसी ने मारा, इसलिये हम उसका बदला अवश्य लेंगे, सीधे थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से न दे सकेंगे, तो दूसरे किसी उपाय की सोचेंगे, और कुछ नहीं, तो बैठे-बैठे मन में ही संकल्प-विकल्पों का ताना-बाना बुनेंगे। नतीजा यह होगा कि अगर यह 'फल' था, हमारे ही कर्मों का परिणाम था, किसी पिछले कारण का 'कार्य' था, तो भी यह सिर्फ 'कार्य' या 'फल' न रहकर फिर कारण बन जाता है, और अगले चक्र को चला देता है। और, अगर यह हमारे किसी पिछले कर्म का फल नहीं था, एक नया कारण था, जिसने हमें थप्पड़ मारा उसने एक नया सिलसिला शुरू किया था, तब तो कार्य-कारण के नियम के अनुसार उसे इसका फल मिलना ही है--इससे भी चक्र का चल पड़ना स्वाभाविक ही है। हर हालत में, प्रत्येक 'कर्म'--चाहे वह कारण हो, चाहे कर्म--एक चक्र को चला देता है, और प्रत्येक कर्म पिछले कर्म का कार्य और अगले का कारण बनता चला जाता है। इस प्रकार यह 'आत्म-तत्त्व' कर्मों के एक ऐसे जाल में बंधता जाता है जिसमें से निकलने का कोई उपाय नहीं सूझता। इसमें से निकलने का हर झटका एक दूसरी गांठ बांध देता है, और जितनी गांठें खुलती जाती हैं उतनी ही नयी गांठें पड़ती जाती हैं।

^कर्म का चक्र' तथा ^भाग्य'-

'कार्य-कारण' के अटल नियम से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं, तो क्या 'कर्म' के बन्धनों से बच निकलने का भी कोई रास्ता नहीं? तब तो जो-कुछ हो रहा है--ठीक हो या गलत--ऐसा होना ही है, कुछ टल नहीं सकता, जो-कुछ जो रहा है वह कर्मों का फल है, जो-कुछ होगा वह कर्मों का फल होगा, हम इसमें क्या कर सकते हैं? अगर बुरा हो रहा है तब भी हमारे बस का नहीं, अगर अच्छा हो रहा है तब भी हमारे बस का नहीं। कार्य-कारण के अटल नियम की तरह कर्म का अटल नियम काम करेगा, हम चाहेंगे तब भी करेगा, न चाहेंगे, उल्टा चाहेंगे, तब भी करेगा। इसी को आम बोलचाल की भाषा में 'कर्मों का लेखा', 'प्रारब्ध', 'भाग्य', 'दैव' आदि शब्दों से पुकारा जाता है। अगर कार्य-कारण का नियम ही आध्यात्मिक-जगत् में कर्म का सिद्धान्त है, तो जैसे कार्य-कारण के नियम में 'अवश्यंभाविता' और 'चक्रता' है, वैसे कर्म में भी अवश्यंभाविता और चक्र का होना आवश्यक है--यही 'प्रारब्ध' है, 'भाग्य' है, 'दैव' है। अच्छा-बुरा जो-कुछ हो रहा है वह कार्य-कारण का विस्तार है, पिछले कारण ऐसे थे जिनसे वर्तमान कार्य ही उत्पन्न हो सकते थे, दूसरे नहीं, इस समय के कार्यों से ऐसे कारण बन रहे हैं जिनसे आगे होने वाले कार्य ही उत्पन्न हो सकते हैं, दूसरे नहीं। कर्मों के सिद्धान्त को मानकर चलने का यह भयंकर परिणाम सामने आ खड़ा होता है। आत्म-तत्त्व की स्वतंत्रता--वह स्वतंत्रता जिसके लिये हम क्षण-क्षण तरसते हैं, जिसके लिये जातियां और देश सदियों तक जीवन-मरण का युद्ध किया करती हैं-- वह स्वतंत्रता एक मरु-मरीचिका की तरह कभी हाथ में न आने वाली वस्तु हो जाती है। 'पुरुषार्थ' के स्थान में 'भाग्य' एक लम्ब-चौड़ा लेखा लेकर हमारे सामने आ खड़ा होता है।

कर्म का वर्तमान विज्ञान-

इस उलझन में से निकलने का क्या रास्ता है? सबसे आसान रास्ता तो यह है कि कर्म के सिद्धान्त को ही न मानें। कर्म को कार्य-कारण का ही एक रूप मानने से ही तो पूर्वजन्म और पुर्नजन्म मानना पड़ता है, इन्हें मानने से कर्मों की उलझन उठ खड़ी होती है। यह न मानकर इतना ही मानें कि जो-कुछ हो रहा है इस जन्म में हो रहा है। हम पैदा हुए--माता-पिता के रज-वीर्य के द्वारा उनके तथा 'वंश-परंपरा' (Heredity) के संस्कारों को लेकर जन्म, उसके बाद जैसी 'परिस्थिति' (Enviroment) में रहे उसके अनुसार बने या बिगड़े, अन्त में समाप्त हो गये। न पिछला सिलसिला, न अगला सिलसिला, यहीं की कहानी यहीं समाप्त हो गयी। वर्तमान विज्ञान यही मानता है। परन्तु क्या ऐसा हो सकता है?

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-7

शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

'शम' की सम्पत्ति को प्राप्त करने का तीसरा साधन यह है कि किसी व्यक्ति को, किसी भी वस्तु को बुरा न समझो, किसी को कुदृष्टि से न देखो। यदि तुम प्रत्येक स्थान, प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक वस्तु को बुरा कहते रहोगे, प्रत्येक बात में दोष निकालते रहोगे, हर समय दूसरों की आलोचना करते रहोगे, तो याद रक्खो कि तुम्हारा हृदय और मस्तिष्क भी वैसा ही बनता चला जायेगा। जैसा दृष्टिकोण होगा, वैसा ही तुम्हारा मन बनता जायेगा।

एक कथा सुनिये। वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देख कर सोचा, कितना सुन्दर स्थान है यह, यहाँ बैठकर ईश्वर का ध्यान करूँगा। एक चोर ने उसे देखा सोचा, वाह! यह तो सुन्दार स्थान है, चोरी का माल यहाँ लाकर रखा करूँगा। एक दुराचारी ने देखा, सोचा हा तो अत्यंत एकान्त स्थान है दुराचार करने के लिये इससे उत्तम स्थान और कहाँ मिलेगा। एक जुआरी ने देखा सोचा, अपने साथियों को यहाँ लाऊँगा, यहाँ बैठकर हम जुआ खेलेंगे। एक ही मकान को अलग अलग दृष्टिकोण होन के कारण प्रत्येक व्यक्ति ने अलग अलग रूप में देखा। जैसा दृष्टिकोण बनाओगे, वैसा अन्तःकरण बनेगा अवश्य। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा अन्तःकरण अच्छा हो तो दृष्टिकोण अच्छा बनाओ।

'शम' की सम्पत्ति को प्राप्त करने का चौथा साधन है प्रणायाम, पहले अपने घर में इसका अभ्यास करो। वास्तविकता को पहचानो। जो जड़ है उसका मोह छोड़ दो, अच्छी वस्तुओं के लिये इच्छा उत्पन्न करो फिर एकान्त में जाकर अभ्यास करो। यदि घर में ही मन को ठीक शिक्षा न दोगे तो बाहर जाके शैतानी करेगा।

नारद जी एक बार एक नगर में आये और कहा- यहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं। एक और नगर में आये। एक पुराना मित्र उन्हें मिला, संसार की विपत्तियों में फँसा हुआ। नारद जी ने कहा, 'यहाँ संकट में पड़े हुए हो, आओ तुम्हें सवर्ग में ले चलूँ।' उसने कहा, 'और क्या चाहिये।' दोनों पहुँच गये स्वर्ग में, वहाँ सुन्दर पत्तों वाला, सुन्दर छाया वाला कल्पवृक्ष खड़ा था। नारद जी ने कहा, 'तुम इस वृक्ष के नीचे बैठो, मैं अभी अन्दर से मिलकर आता हूँ।' नारद जी चले गये तो उस आदमी ने इधर उधर देखा। सुन्दर वृक्ष, सुन्दर छाया, धीमी धीमी शीतल वायु। उसने सोचा कितना उत्तम स्थान है, यदि एक आराम कुर्सी होती तो मैं उस पर बैठ जाता। वह था कल्पवृक्ष, उसके नीचे खड़े होकर जो इच्छा की जाय वह पूरी होती है। उसी समय पता नहीं कहाँ से एक आराम कुर्सी आ गई। वह उस पर बैठ गया। बैठकर उसेन सोचा एक पलंग होता तो थोड़ी देर के लिये लेट जाता मैं। विचार करने की देर थी कि पलंग भी आ गया। वह लेट गया। लेटते ही सोचने लगा- 'घर में होता तो पत्नी से कहता, मेरी टाँगे दबा दे, मेरा सिर मल दे।' सोचते ही बहुत सी अप्सरायें वहाँ उपस्थित हो गईं। कोई पांव दबाने लगी, कोई गीत गाने लगी, कोई नाचने लगी। उस आदमी ने उन सबको देखा तो सोचा, 'यदि इन सब स्त्रियों के साथ मेरी पत्नी भी मुझे देख ले तो झाड़ू लेकर मेरी पिटाई कर डाले।' सोचना अभी समाप्त भी न हुआ था कि हाथ में झाड़ू लेकर पत्नी आ गई। धड़ाधड़ उसको मारने लगी अप्सरायें भाग गईं। वह पलंग से उठकर दौड़ा। आगे आगे वह, पीछे पीछे झाड़ू लिये हुए पत्नी। नारद जी ने लौटते हुए उसे दूर से देखा। पुकार कर बोले, 'मूर्ख सोचना ही था तो कोई अच्छी बात सोचते, यह क्या सोच बैठे तुम, यह कल्पवृक्ष है।'

सो भाई मेरे, प्राणायाम के कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर अच्छी बातें सोचना, बुरी बातें नहीं सोचना। मन और प्राण का गहरा सम्बन्ध है। जहाँ एक जाता है वहाँ दूसरा भी जाता है। मन को शान्त करने के लिये प्राणायाम एक उत्तम साधन है। जगद्गुरू शंकर और महर्षि दयानन्द दोनों ने इसकी महिमा गाई है। चार प्रकार के प्राणायाम हैं- रेचक (श्वास को बाहर निकालना) तब बाहर के कुम्भक (श्वास को बाहर रोके रहना) तब पूरक (श्वास को अन्दर खींचना) तब अन्दर का कुम्भक (अन्दर खींचे हुए श्वास को अन्दर ही रोकना)। अन्दर का या बाहर का वह कुम्भक तीन मिनट का हो जाये, तो मन हाथ बाँध कर खड़ा हो जायेगा, पूछेगा-'क्या चाहते हो' तब हृदय में या भृकुटि में जहाँ भी ध्यान लगाओगे वहाँ प्रकाश दिखाई देगा। सामवेद में इसी प्रकार का उल्लेख करते हुए कहा गया है, 'मैं इस महान प्रकाश का ध्यान करता हूँ'। यह जो दृष्टिगोचर होगा, आरम्भ में माया का प्रकाश होगा, प्रकृति का प्रकाश। इसके अन्दर प्रविष्ट हो जाओ, तब आत्मा का प्रकाश दिखाई देगा, अधिक शीतल और अधिक प्रकाश मान उस प्रकाश में ओ३म् का आश्रय लेकर आगे बढ़ो। ओ३म् का जाप करते हुए या किसी और नाम का जाप करते हुए, ओ३म् को देखने का प्रयत्न करते हुए आगे बढ़ो तब आनन्द का द्वार खुल जायेगा उसके दर्शन होंगे जिसके लिये योगी योग करते हैं। ज्ञानी ग्रन्थ पढ़ते हैं ध्यानी वर्षों तक कठोर तपस्या करते हैं तब तुम्हें कुछ करना नहीं होगा। सब कुछ स्वयं हो जायेगा। कबीर की भाँति तुम भी कह सकोगे-

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हर फिरें, कहत कबीर कबीर।।

मन शान्त हो जायेगा उस समय शम की वह सम्पत्ति प्राप्त हो जायेगी, जिसे षट् सम्पत्ति में सबसे प्रथम स्थान दिया गया है।

शम के पश्चात् दूसरी सम्पत्ति है दम अर्थात् इन्द्रियों का दमन, उन्हें वश में करना। इन्द्रियाँ हैं दो प्रकार की। एक वे जो बाहर का ज्ञान हमारे पास लाती हैं दूसरी वे जिनसे हम कर्म करते हैं। ज्ञान लाने वाली इन्द्रियाँ कहती हैं अमुक वस्तु का स्वाद बहुत उत्तम है, अमुक वस्तु बहुत सुन्दर है, अमुक शब्द मन को मोहने वाला है। कर्म करने वाली इन्द्रियाँ कहती हैं, हम उन्हें लेंगी। दोनों अपना अपना व्यापार चलाती रहती हैं। मन उनका और आत्मा मन का दास बन जाता है। उस स्वामी से समान जो रथ में सवार हो, रथ का सारथी घोंड़ों के वश में हो, और घोड़े आवारा हों। इन घोड़ों को, इन इन्द्रियों को वश में रखना चाहिये। किस प्रकार यह हो सकता है इसके सम्बन्ध में एक कथा सुनिये। स्वामी रामतीर्थ जब प्रोफेसर रामतीर्थ थे, तब लाहौर के एक कालिज में पढ़ाते थे। रहते थे लुहारी दरवाजा में। कालिज से घर को आ रहे थे, तो लुहारी दरवाजे में उन्होंने एक व्यक्ति को टोकरी में रख कर नींबू बेचते हुए देखा। पीले रंग के रस भरे नींबू थे वे। मुख में पानी आ गया जिस्वा ने कहा, 'क्रय कर लो, उनका स्वाद बहुत उत्तम है।' तीर्थ राम थोड़ी देर रुके, फिर आगे बढ़ गये। आगे जाकर जिस्वा फिर मचली, उसने कहा, 'नींबू अच्छे तो थे, नींबू खाने में हानि क्या है?' तीर्थ राम उल्टे आये। नींबुओं को देखा वास्तव में बहुत उत्तम थे। उन्हें देखकर फिर घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर गये तो जिस्वा फिर चिल्ला उठी, 'नींबू का रस तो बहुत अच्छा है, नींबू तो खाने की चीज है, उसे खाने में पाप क्या है?' तीर्थ राम पुनः नींबू वाले के पास आये। दो नींबू मोल ले लिए। घर पहुंचे देवी से कहा, 'चाकू लाओ'। उसने चाकू लाकर रख दिया। तीर्थ राम चाकू को नींबू के पास और दोनों को अपने समक्ष रख कर बैठ गये। बैठे रहे, देखते रहे, अन्दर से आवाज आई, 'इन्हें काटो, काटने में हानि क्या है?' रामतीर्थ ने चाकू उठाया और एक नींबू को काट दिया। मुख में पानी भर आया। अन्दर से फिर प्रेरणा हुई, इसे चखकर तो देखो, इनका रस बहुत उत्तम है। रामतीर्थ ने एक टुकड़े को उठा लिया, जिस्वा के समीप ले गये, नींबू को उसके साथ लगने नहीं दिया। अन्दर से किसी ने पुकार कर कहा, 'तू क्या इस जिस्वा का दास है, जो यह जिस्वा कहेगी, वही करेगा जिस्वा तेरी है, तू जिस्वा का नहीं।' समक्ष खड़ी पत्नी ने कहा, 'यह क्या करते हो, नींबू को लाये, इसे काटा, अब खाते क्यों नहीं' जिस्वा ने कहा, 'शीघ्रता करो नींबू का स्वाद बहुत उत्तम है।' रामतीर्थ शीघ्रता से उठे, कटे हूए और बिना कटे दोनों नींबुओं को उठा कर गली में फेंक दिया, प्रसन्नता से नाच उठे, मैं जीत गया, मैं जीत गया।

यह है इन्द्रियों को वश में करने की विधि। इनकी नहीं, इनके पीछे बैठे हुए आत्मा की, आत्मा के अन्दर बैठे हुए ईश्वर की प्रेरणा सुनो। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के नवें समुल्लास में कहते हैं-'जब इन्द्रियाँ अर्थों में, मन इन्द्रियों और आत्मा के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करे अच्छे या बुरे कर्मों में लगता है, तभी बहिर्मुख हो जाता है। इसी समय भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों का भय, शंका एवं लज्जा उत्पन्न होती है, वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है, जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्तता है, वही मुक्ति जैसा सुख प्राप्त करता है।' इसी प्रकार महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में ये बतलाते हैं कि जब आत्मा और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता या चोरी आदि बुरी या परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उसी समय जीव की इच्छा, ज्ञान आदि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है। उसी क्षण आत्मा के अन्दर से बुरे काम करने में भय शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय निःशंकता और आनन्द, उत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।'

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन

गुरु गोविन्द सिंह

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

कंघा केस बेस कड़ा कठिन कृपाण धारि
पंचनद बीर शिष्यमण्डल नरिंद भो।
ह्वै गयो थकित अवरंग अपकारी कार
दै सको न हार ऐसो धरम बलिन्द भो।
देस को ब्रजेश आपने दै अभिमानी पुत्र
पालि प्रण पूरो अजरामर जो हिन्द भो।
राखिबो को हद्द हिन्दुवाने की मलेक्षन तैं
अंश अवतारी गुरू गोबिंद गुबिंद भो।।

–ब्रजेश विनोद' से

आत्म निर्भर स्वदेश

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

बने आत्म निर्भर स्वदेश, जब तब विकास होगा सच्चा।
'बापू' के इस मूलमंत्र को, समझे हर बच्चा बच्चा।।
कच्चा माल हमीं से लेकर, हमसे ही पैसा ऐंठें।
हाय विदेशी लूट रहे धन, भारत का बैठे-बैठे।।
वस्त्र-विदेशी की होली को, 'राष्ट्रपिता' ने जलवाया।
धारण करो स्वदेशी खादी, घर-घर चरखा चलवाया।।
तभी विवश हो अँग्रजों ने, भारत पर शासन छोड़ा।
राष्ट्र-नायकों ने परन्तु उस रीति नीति से मुख मोड़ा।।
आज विदेशी भारत में ही, कारबार अपना खोले।
बना मूर्ख भारत जनता को, भरते निज जेबें झोले।।
यही देख कर 'भारतेन्दु जी', थे दुख-आँसू भर रोये।
अब 'नरेन्द्र मोदी' जी ने है, जन उर बीज वही बोये।।
मिथ्या चकाचौंध को त्यागो, तथ्य सत्यता अपनाओ।
भारतीय जो वस्तु बनाएँ, वे पहनो वे ही खाओ।।
बने सोन चिड़िया फिर भारत, वस्तु विदेशी को त्यागो।
हर भारतवासी सुबुद्ध हो, प्रभु से 'अबोध' यह वर माँगो।।

–चन्द्र मण्डप, 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

प्रश्न अधूरे जीवन के

❑रमा आर्य 'रमा'

प्रश्न अधूरे जीवन के, ले पास तुम्हारे आए हैं।
मिले नहीं उत्तर जिनके, वह सूत्र सुनाने आए हैं।।
सुलझ न पाए समीकरण, उत्तर सभी निरुत्तर हैं।
उलझे मन की पीड़ा के, संताप सुनाने आए हैं।।
चुटकी भर छाँव मिली मन को, चुटकी भर धूप समेटे हैं।
भटके-भटके उर अन्तस की, कथा सुनाने आए हैं।।
मिला नहीं उत्तर जिनका, वह अपनी गणित अधूरी है।
मन ज्यामिति संरचना के, निर्णय सुनाने आए हैं।।
स्वप्नों की दुनिया से अबतक, कुछ भी है मिला नहीं।
जागे मन की विविधाओं का, इतिहास सुनाने आए हैं।।
आशा और निराशा के, गीत अभी कुछ हैं बाकी।
मन वीणा के सरगम का, स्वर आज सुनाने आए हैं।।

(मन आँगन आकाश पराया' से)

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

राम

❑डॉ. कैलाश निगम

राम हैं नाम नहीं
किसी व्यक्ति का
भावना का इसे
स्पर्श कहेंगे।
राम है शोक की
औषधि एक
इसे अनुगुंजित
हर्ष कहेंगे।
राम पवित्र-चरित्र
का द्योतक
सभ्यता का
उत्कर्ष कहेंगे।
आप इन्हें
अवधेश कहें
हम राम का
भारतवर्ष कहेंगे।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

भारत महान

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

जय हो भारत देश महान।
जन्म-भूमि हमको है प्यारी,
तन-मन से हम बने पुजारी,
मिले प्रकृति से बुद्धि, स्वास्थ्य, बल,
हम गाएँ सादर गुणगान।
जल से भरें सरोवर-नदियाँ,
जिसमें खेलें मगर-मछलियाँ,
फल-फूलों से वृक्ष लदे हों,
हरे-भरे हों वन-उद्यान।
ऊँचा रहे तिरंगा प्यारा,
जग में चमके नाम हमारा,
वातावरण स्वच्छ-सुन्दर हो,
सबके मुख पर हो मुस्कान।
जय हो भारत देश महान।

–117, आदिल नगर, लखनऊ–22

हर्ष–चतुष्पदी

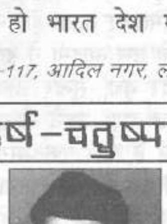

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

विवेक से है शून्य तो शक्तिमान कैसा?
जनकल्याण के अभाव में विज्ञान कैसा?
लक्ष्य जाने बिना होता है लक्ष्यभेद नहीं-
अटकलों की प्रत्यंचा पर सन्धान कैसा?
साधन नहीं, सम्मान नहीं, प्रस्थान कैसा?
कार्य नहीं, कारण नहीं, तो अनुमान कैसा?
भक्त और भक्ति बिना मिलता भगवान नहीं-
जब पूजा अर्चना नहीं, तो वरदान कैसा?

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो!

❑गोपालदास 'नीरज'

यह नफरत की बारूद न बिखराओ साथी!
यह युद्धों का जहरीला नारा बन्द करो,
जो प्यार तिजोरी-सेफों में है तड़प रहा
उसके बन्धन खोलो, उसको स्वच्छन्द करो!
मृत मानवता जिन्दगी माँगती है तुम से
दो बूँद स्नेह की उसके प्राणों में ढालो,
आदम का जो यह स्वर्ग हो रहा है मरघट
जाओ ममता का एक दिया उसमें बालो!
निर्माण घृणा से नहीं, प्यार से होता है,
सुख-शान्ति खड्ग पर नहीं, फूल पर चलते हैं,
आदमी देह से नहीं, नेह से जीता है,
बम्बों से नहीं, बोल से वज्र पिघलते हैं!
तुम डरो न, आगे आओ निज भुज फैलाओ
है प्यार जहाँ, तलवार वहाँ झुक जाती है,
पतवार प्रेम की छू जाये जिस कश्ती को
मँझधार, पार उसको खुद पहुँचा आती है।
जिसके अधरों पर गीत प्रेम का जीवित है
वह हँसकर तूफानों को गोद खिलाता है,
जिसके सीने में दर्द छुपा है दुनियाँ का
सैलाबों से बढ़कर वह हाथ मिलाता है।
कितना ही क्यों न बड़ा हो घाव हृदय में, पर
सच कहता हूँ यह प्यार उसे भर सकता है,
कैसा ही बागी-दुश्मन हो आदमी मगर
बस एक अश्रु का तार कैद कर सकता है।
कितना ही ऊबड़-खाबड़ हो रास्ता किन्तु
यह प्यार फूल-सा तुम्हें उठा ले जायेगा,
कैसी ही भीषण अँधियारी हो धुँआ-धुन्ध
पर एक स्नेह का दीप सुबह ले आएगा।
मैं इसीलिए अक्सर लोगों से कहता हूँ,
जिस जगह बँटे नफरत, जा प्यार लुटाओ तुम
जो चोट करे तुम पर उसके चूम लो हाथ,
जो गाली दे उसको आशीष पिन्हाओ तुम।
तुम शान्ति नहीं ला पाए युद्धों के द्वारा
अब फेंक जरा तलवार, प्यार लेकर देखो,
सच मानो निश्चय विजय तुम्हारी ही होगी
दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो!

(प्राण-गीत से)

साधना सयानी हुई जाती है

❑बलबीर सिंह 'रंग'

रवि शशि तारक तुम्हारी चारु चितवन में,
सृष्टि मंजु रचना है कौतुक तिहारे की।
प्रलय प्रभंजन में प्राणों के पंछियों को,
झाँकी दिखलाते भव-सिन्धु के किनारे की।
कल परसों की बात गणिका अजामिल की,
चर्चा बड़ी है गजराज के उबारे की।
हाथ थाम लेना बदनाम कर देना मत,
लाज रख लेना नाथ, नाम के पुकारे की।।

कौन किस वाणी कहे कोई किस कान सुने,
याचक की याचना कहानी हुई जाती है।
रूप, रस, गंध में नवीनता दिखाती नहीं,
पावन तप प्रीति भी पुरानी हुई जाती है।
दर्शन दे शीतल बनाओ तप्त लोचनों को,
जीवन की ज्योति पानी पानी हुई जाती है।
चरण बढ़ाओ आओ करुणाकर वरण करो,
अनव्याही साधना सयानी हुई जाती है।।

लखनऊ-समाचार

सत्यनारायण ट्रस्ट द्वारा आध्यात्मिक समारोह

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं जिला वेद प्रचार संगठन, लखनऊ के तत्वावधान में ५१ कुंडीय देवयज्ञ, सत्संग एवं वेदकथा का आयोजन दि.१३ एवं १४ फरवरी २०२१ शनिवार, रविवार को आर्ष गुरुकुलम् विद्या मंदिर, गुरुकुल नगर, निकट रसूलपुर कायस्थ, शुक्ला चौराहा, जानकीपुरम्, लखनऊ में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। दिनांक १३ फरवरी को 'श्रुति दर्शन सम्मान समारोह' तथा १४ फरवरी को 'श्रुति दर्शन' पत्रिका के नवीन अंक के लोकार्पण का कार्यक्रम डॉ.भानु प्रकाश आर्य की अध्यक्षता एवं श्री सर्वमित्र शास्त्री के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

वेद प्रचार का यह अभूतपूर्व समारोह चार सत्रों में विभक्त था। १३.०२.२१ को प्रथम सत्र का विषय था- ईश्वर जीव प्रकृति का परिचय। अध्यक्ष थे-श्री अरविन्द गुप्त तथा संचालक थे श्री संजीव कुमार मिश्र। द्वितीय सत्र का विषय था- सुख का धाम गृहस्थ आश्रम- इस सत्र के अध्यक्ष थे श्री आर.के.शर्मा तथा संचालन किया श्रीमती कविता सहगल ने।

१४.०२.२१ के प्रथम सत्र का विषय था- श्रीराम, श्रीकृष्ण आर्यपुत्र क्यों? आर्य कहाँ से आये? इस सत्र की अध्यक्षता की डॉ.सत्यकाम आर्य ने तथा संचालिका थीं श्रीमत रश्मि गुप्ता। रविवार को द्वितीय सत्र का विषय था- धर्म का वास्तविक स्वरूप। श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान आर्य समाज टाण्डा ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा संचालन श्री नवीन सहगल ने किया। आचार्य विश्वव्रत शास्त्री ने आभार प्रदर्शन के साथ अपने वक्तव्य में ट्रस्ट की गतिविधियों की विशद जानकारी दी। समारोह में विशेष रूप से प्रख्यात आर्य विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, नई दिल्ली को अमंत्रित किया गया जिन्होंने अपनी सुललित वाणी में व्यापक प्रभाव छोड़ा तथा धर्म के गूढ़ रहस्यों का उद्‌घाटन किया। इसके अतिरिक्त स्वामी सोमदत्त आचार्य, हिसार (हरियाणा) एवं पं.कुलदीप विद्यार्थी, बिजनौर भजनोपदेशक को भी आर्य जनता ने बड़े गौर से सुना।

आर्य समाज गोमती नगर

२४ जनवरी २०२१, रविवार को साप्ताहिक देवयज्ञ एवं कार्यकारिणी की बैठक

का आयोजन आर्य समाज गोमती नगर के प्रधान गोविन्द पालीवाल के आवास ३/४३७, विवेक खण्ड में हुआ। यज्ञ श्रीमती सुमन पाण्डेय के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सर्वश्री वासुदेव आय-मंत्री, शिवधर मौर्य-कोषाध्यक्ष, वी.पी.कपूर, अशोक साहू, विजय गुप्ता सहित अन्य परिजन भी उपस्थित रहे। यज्ञ के उपरान्त कु.समृद्धि ने भजन और डॉ.बाबूराम जी, योग प्रमुख ने अपने प्रवचन एवं भजन से सभी का मन मोह लिया। समाज की बैठक का आयोजन गोविन्द पालीवाल प्रधान की अध्यक्षता में हुआ। बैठक के दौरान समाज के सदस्यता शुल्क के साथ ही मासिक पत्र 'आर्य लोक वार्ता' के लिए वार्षिक चन्दा भी एकत्र किया गया अन्यान्य विषयों पर चर्चा के बाद प्रसाद वितरण के साथ ही धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(वासुदेव आर्य, मंत्री)*

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' को बाल साहित्य सम्मान

आर्य लोक वार्ता के सुपरिचित हस्ताक्षर, संवाद प्रमुख कविरत्न श्री गौरीशंकर

वैश्य 'विनम्र' को इस वर्ष हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश का प्रतिष्ठित 'सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया है। इस सम्मान में ५१ हजार रुपये की धनराशि प्रदान की जाती है। हिन्दी प्रेमियों द्वारा संस्थान के इस निर्णय का हार्दिक स्वागत किया गया है। 'आर्य लोक वार्ता' के लिए यह गर्व का अवसर है। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य, मुख्य संरक्षक एवं निर्देशक कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य, वेदमंत्रों के काव्यानुवादक श्री अमृत खरे, कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा' ने श्री विनम्र को एतदर्थ हार्दिक बधाई दी है तथा हिन्दी संस्थान उ.प्र. को इस विवेकपूर्ण निर्णय हेतु धन्यवाद दिया है।

'मलयज' शिप पर

'विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना'- संस्कृत की इस प्रसिद्ध उक्ति को

चरितार्थ करते हुए उदीयमान आर्य नवयुवक मलयज त्रिपाठी दि.२१.०१.२०२१ को स्पेन में विश्व की शीर्षस्थ शिपिंग कम्पनी 'मस्क' के शिप पर पहुँच गये। मलयज ने एमेट विश्वविद्यालय चेन्नई से ग्रेजुएशन किया था, वहीं प्रथम वर्ष में ही 'मस्क' कम्पनी द्वारा उनका चयन हो गया था। कोरोना काल के अनेक व्यवधानों, परीक्षणों के कठिन दौर से गुजरने के बाद सफलता का शिखर छूने वाले आर्य युवक को बधाई एवं शुभकामनाएँ! *-सम्पादक*

बालिका नामकरण संस्कार

१०.०१.२०२१। श्री अभिषेक सिंह एवं श्रीमती प्रियंका सिंह की नवजात पुत्री का नामकरण संस्कार श्री जयसिंह, इन्द्र पुरी, नारायण नगर, लखनऊ के आवास पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। बालिका का नाम 'अन्वी' रखा गया। इस अवसर पर श्री जयसिंह, शिवानी, विशाल सिंह, आकाश सिंह, सोनी, मंजू सिंह, मीना, शैलबाला सिंह इत्यादि परिवार के समस्त सदस्य मौजूद थे जिन्होंने बालिका 'अन्वी' पर आशीर्वादों की पुष्पवर्षा की। परिवार के वयोवृद्ध श्री रामकरन सिंह, पूर्व कोषाध्यक्ष, कल्याण समिति की उपस्थिति विशेष उत्साहप्रद थी। ज्ञातव्य है कि श्री अभिषेक सिंह, जो १६/४१३, इन्दिरा नगर में रहते हैं, के पूज्य नानाजी आर्य समाज फतेहपुर के प्रधान थे। प्रसन्नता का विषय है कि श्री अभिषेक सिंह भी वैदिक परम्पराओं का पालन करते हैं और श्रीमती प्रियंका का उन्हें पूर्ण सहयोग मिलता है। प्रियंका श्री जयसिंह (इन्द्रपुरी) की सुपुत्री हैं।

उतरौला-समाचार

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज उतरौला का वार्षिक निर्वाचन वर्ष २०२१ हेतु दिनांक २० जनवरी २०२१ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये-

श्री दिलीप कुमार	प्रधान
श्री श्रवण कुमार	उपप्रधान
श्री दिनेश कुमार	मंत्री
श्री सतीश चन्द्र	कोषाध्यक्ष
श्री राम प्रकाश	उप कोषाध्यक्ष
श्री कौशल कुमार	पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री सचिन कुमार	निरीक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए प्रतिनिधि- श्री रामदेव, श्री सुरेन्द्र प्रताप

आर्य समाज उतरौला का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज उतरौला का ८३वां वार्षिक उत्सव ऋषिबोध के पावन पर्व के अवसर पर दि.५ से १३ मार्च २०२१ तक मनाया जायगा। उत्सव में जिन विद्वानों को उपदेश हेतु आमंत्रित किया गया है, वे हैं-आचार्य विमल आर्य, लखनऊ; श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, लखनऊ; श्री दिनेश आर्य, संयोजक-आर्यवीरदल, दिल्ली; श्री कुलदीप भजनोपदेशक, दिल्ली; श्री ठाकुर प्रसाद, बहराइच। प्रतिदिन प्रातःकाल ८ से १० बजे तक यज्ञ, भजन, अपराह्न २ से ५ बजे तक भजन, उपदेश आदि। आर्य समाज के पदाधिकारियों ने समस्त धर्मप्रेमियों को सपरिवार आमंत्रित किया है। *(प्रेमचंद शर्मा)*

लखनऊ-समाचार

कोरोना काल में अपूरणीय क्षति

-रामा आर्य 'रमा'

श्री रमन पाण्डे-'आर्य लोक वार्ता' के स्वाध्याय मण्डल, नेवाजगंज, चौक के प्रथम सदस्य श्री रमन पाण्डे का ७०वर्ष की आयु में दुःखद निधन हो गया। आप अपने पीछे पत्नी डॉ.वीरांगना रमन, पुत्र डॉ.अरुलांशु रमन, पुत्रवधू-डॉ.शालिनी रमन का छोड़ गये हैं।

श्री वी.एन.टण्डन-सेवानिवृत्त खण्ड विकास अधिकारी (बी.डी.ओ.) का ८४वर्ष की आयु में १४ अगस्त '२० को निधन हो गया। आप अपने पीछे पत्नी के अलावा तीन पुत्रों-पुत्रवधुओं का परिवार छोड़ गये हैं।

श्री लालजी शुक्ल-श्री लालजी शुक्ल नेवाजगंज, चौक, लखनऊ, विष अनुसंधान विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी थे। आपका ७७वर्ष की आयु में विगत १८ सितम्बर '२० को निधन हो गया। आप अपने पीछे पत्नी, पुत्र-धीरज, पुत्र वधू तथा चार पुत्रियों का परिवार छोड़ गये हैं। सभी पुत्रियाँ विवाहित हैं। श्री शुक्ल अत्यंत मिलनसार मृदुभाषी सामाजिक सरोकारों के व्यक्ति थे।

श्री महेश प्रसाद पाण्डे-प्रसिद्ध कवि, छंदकार आगामीर ड्योढी निवासी ५८ वर्षीय श्री महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' विगत २६ नवम्बर २०२० से लापता हैं। मार्ग में लगे सीसीटी कैमरे में बुद्ध पार्क के समीप गोमती किनारे तक जाना प्रदर्शित है। प्रतिभा सम्पन्न कवि का वियोग अत्यधिक दुःखद है। आप प्रारंभ से ही 'आर्य लोक वार्ता' के नियमित पाठक थे। उनके अन्तर्ध्यान होने के हमें हार्दिक दुःख है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्‌गति प्रदान करे।

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी '21 अंक में प्रकाशित 'साक्षात्कार' से

वेदों के काव्यानुवाद को मिला नया आकाश

'आर्य लोक वार्ता'-अंक जनवरी 2021 में काव्यानुवादक कविवर अमृत खरे और मीडिया विशेषज्ञ श्री संजय माथुर के साक्षात्कार के प्रकाशन से वेदों के सम्बन्ध में जानकारियों की अनेक पर्तें खुलीं, ढेर सारी उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियायें मिलीं, उन्हीं के मध्य आर्य समाज के शीर्ष आर्यनेता, प्रबुद्ध विचारक श्री आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने पत्र भेजकर श्री अमृत खरे से परिचय प्राप्त करने की अभिलाषा व्यक्त की तथा इस काव्यानुवाद के उच्चस्तरीय प्रकाशन की कामनाएँ प्रकट की है। यहाँ हम आनन्द बाबू के पत्र को अविकल रूप में प्रकाशित कर रहे हैं-

जाने माने मीडिया विशेषज्ञ श्री संजय माथुर द्वारा कविवर अमृत खरे से बातचीत (आर्य लोक वार्ता, जनवरी '२१) में यह बताया गया है कि वेद मंत्रों का काव्यानुवाद विद्वानों द्वारा होता रहा है, हो रहा है किन्तु आपके काव्यानुवाद कुछ अलग पद्धति से हैं, जो दो सौ से अधिक पहुँच चुके हैं। मुझे यह जानने की उत्कंठा है कि आप इसे कहाँ तक ले जाना चाहते हैं? पुस्तक प्रकाशन में कितने काव्यानुवाद का संकलन आप रखना चाहेंगे- जिससे चारों वेदों के काव्यनुवाद का तारतम्य परिलक्षित हो।

मैं आपको अपना परिचय संक्षेप में दे देना इस संदर्भ में उचित समझता हूँ।

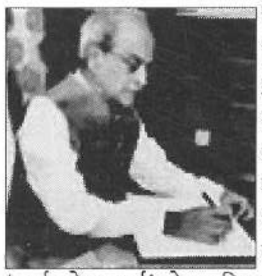

मैं एक आर्य सेवक की हैसियत से पूरे देश तथा विदेश में भी आर्य समाज की सेवा का अवसर प्राप्त कर चुका हूँ। विद्वानों के सम्पर्क से कुछ सीख सका हूँ; उसी कड़ी में डॉ.वेद प्रकाश जी से अपने पिता श्री स्व.मिश्रीलाल आर्य के समय से परिचित हूँ। १९६१ में टाण्डा आर्य समाज के शताब्दी समारोह से विशेष सम्पर्क में हूँ। मैं तीसरी पुश्त का एक कर्मठ आर्य समाजी हूँ। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रारम्भिक काल से जुड़ा हुआ हूँ। अधिक तो नहीं, बीस प्रकाशनों में आपके 'विनय पीयूष' पर नजर पड़ी है जिससे प्रभावित हुआ हूँ। कम से कम दो बार 'आर्य लोक वार्ता' के सम्मान समारोहों में मैं उपस्थित था; जिसमें आपको सुनने की मेरी अभिलाषा थी किन्तु समयाभाव के कारण सम्भव नहीं हो पाया। डॉ.वेद प्रकाश जी के काव्यप्रेम ने कार्यक्रम को बड़ा कर दिया था और मुझे रात्रि में ही टाण्डा वापस जाना पड़ा, जिससे आपके काव्य को सुनने से वंचित रह गया।

जनवरी २०२१ के अंक में आपसे साक्षात्कार को पढ़कर उस उत्कण्ठा को पूरा करने का अवसर प्राप्त किया। आपसे प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार भले हुआ नहीं है किन्तु शुभाकांक्षा के माध्यम से आप को छू सकूँ- इसका मार्ग प्रशस्त हो गया। निश्चय ही उक्त साक्षात्कार की ढेर सारी प्रतिक्रियाएँ आपको प्राप्त हुई होंगी, उसमें कितने ही योग्य प्रवरों ने आपकी दृष्टि का मूल्यांकन कर लिया होगा और उन्हें आपके संकलन के क्रमबद्ध रूप में प्रकाशन की निश्चितता हो गयी होगी।

मैं आपके चतुर्वेदों के काव्यानुवादों के संकलन को एक सुंदर पुस्तक के रूप में शीघ्र प्रकाशन का आकांक्षी हूँ ताकि वेदों के काव्यात्मक प्रकाश भारत ही नहीं- अखिल भुवन को आलोकित कर सके।

-आनन्द कुमार आर्य
दि.०८.०२.२०२१

अत्यावश्यक

'आर्य्य लोक वार्ता' वैदिक विचारधारा के प्रति जन-जन के प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और संकल्प के बलबूते विगत २२ वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रहा है। इसका मुख्य आधार है, हमारे ऋत्विक्/होता/संरक्षक-सदस्य। अस्तु आज की विषम परिस्थितियों में हमारा आपसे विनम्र अनुरोध है कि अविलम्ब आपना आर्थिक योगदान हमें उपलब्ध कराकर वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द की विचारधारा के प्रचार-प्रसार के इस अभियान में शामिल होकर पुण्य के भागी बनें।

सहयोग राशि बैंक ऑफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद/चेक द्वारा जमा कर सकते हैं (बैंक का विवरण पृ.८ पर अंकित है) तथा इसकी सूचना हमें मोबाइल या पत्र द्वारा अवश्य ही दें। इसके अतिरिक्त निम्नांकित स्वाध्याय केन्द्रों पर उनके केन्द्राध्यक्ष/संचालक के पास जमा कर सकते हैं। अधिकृत स्वाध याय केन्द्रों की यहाँ सूची प्रकाशित की जा रही है-

स्वाध्याय केन्द्र तथा केन्द्राध्यक्ष/संचालक तालिका

श्री पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ**	(7309820587)
श्री आचार्य आनन्द मनीषी, वेदमंदिर, राजाजीपुरम, **लखनऊ**	(9935391794)
श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, **लखनऊ**	(9415956866)
श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**	(9335240899)
श्री डोरीलाल आर्य, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**	(9889090411)
श्री बालगोविन्द पालीवाल, आर्य समाज, गोमती नगर, **लखनऊ**	(9792373494)
डॉ. मोहन लाल अग्रवाल, आर्य समाज, लालबाग, **लखनऊ**	(9454711138)
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, चौक, **लखनऊ**	(9919790264)
श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, बहादुर पुर, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री भानु प्रताप सिंह चौहान, जानकीपुरम, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री शचीन्द्र मिश्र शास्त्री,, **सीतापुर**	(9450379549)
श्री पं.राजकुमार शास्त्री, पारा रमनगरा, **सीतापुर**	(7651905966)
डॉ.सत्य प्रकाश, आर्य समाज, सण्डीला, **हरदोई**	(9450858750)

सन् 2021 के आर्य पर्वो की तालिका - आर्य लोक वार्ता का स्नेहोपहार

लोक प्रचलित नववर्ष-२०२१-स्वागतम्

नया वर्ष दे आपको, सुख समृद्धि वरदान।
योग-यज्ञ से प्राप्त हो- स्वास्थ्य सिद्धि सम्मान।।

स्वाध्याय के उच्च शिखर

हमें जिन पर गर्व है

जो कोरोना काल में 'आर्य लोक वार्ता' के आह्वान पर सहयोग हेतु अग्रसर हुए

1. **ठाकुर विक्रम सिंह** – राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली
2. **कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य** – प्रबंधक, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर
3. **आचार्य आनन्द मनीषी** – आर्य समाज, राजाजीपुरम्, लखनऊ
4. **डॉ.भानु प्रकाश आर्य** – प्रधान, आर्य समाज, तालकटोरा, लखनऊ
5. **श्री धर्मेन्द्र आर्य** – आनन्द नगर, रायबरेली
6. **श्री अरुण कुमार विरमानी** – आर्य समाज, चन्द्रनगर, लखनऊ
7. **श्रीमती मीना दीक्षित** – योगाचार्या, गोमती नगर, लखनऊ
8. **श्रीमती रामा आर्य 'रमा'** – नेवाजगंज, चौक, लखनऊ
9. **डॉ.मोहनलाल अग्रवाल** – आर्यसमाज, लालबाग, लखनऊ
10. **चौधरी रणवीर सिंह** – प्रधान, आर्य समाज, सीतापुर
11. **श्रीमती कुमुद गुप्त** – अलीगंज, लखनऊ
12. **डॉ.सत्य प्रकाश** – आर्य समाज, सण्डीला, हरदोई
13. **श्री धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया** – आर्य समाज, राजाजीपुरम्, लखनऊ
14. **श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव** – आर्य समाज, गोमती नगर, लखनऊ
15. **श्री शिवशंकर लाल वैश्य** – जानकीपुरम्, लखनऊ
16. **श्री ओम प्रकाश आर्य** – कोटा, राजस्थान
17. **डॉ.सत्यकाम आर्य** – सत्यनारायण ट्रस्ट, जानकीपुरम्, लखनऊ
18. **डॉ.अशोक पुष्प** – आर्य समाज, बिसवाँ, सीतापुर
19. **श्री सुरेन्द्र कुमार यादव** – रामकृष्ण मिशन परिसर, सीतापुर रोड, लखनऊ

संस्थापक
माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
ज्वालापुर, हरिद्वार
एवं
'आर्य्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक, लखनऊ

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज

राष्ट्रीय चिन्तन-चरित्र-पवित्र कीर्तिः
सद्धर्म-कर्म-परिपालन-पुण्य मूर्तिः।
स्वाध्याय-संयम-समाहित-तत्त्वबोधः
प्राप्तो महर्षि-पदवीं मुनिरात्मबोधः।

संसार राग-रहितस्य जितेन्द्रियस्य
नित्यात्मबोध-परिलब्ध सुखानुभूतेः।
आदर्श जीवन मथोच्च विचारकस्य
धान्यं प्रशस्यमुपकार-परायणस्य।

द्वारे हरेरखिल पुण्यमय प्रदेशे,
ज्वालापुरीय सुभगाश्रम सन्निविष्टः।
भाद्रेऽसिते बुध दिनान्वित द्वादशम्याम्
प्रातः प्रबोध समये गत आत्मबोधः।

संस्थाप्य लक्ष्मणपुरे प्रमुखार्यलोकम्,
पुण्याश्रमे च सुकृतात्मजनप्रबोधः।
संवित् स्वरूप सततोज्झित कर्मबन्धः
अद्यापि जीवति स कीर्ति कलेवरेण।

-डॉ.सुधाकर द्विवेदी

आर्य पर्वो की तालिका : विक्रमी सम्वत् 2077-78 तद्नुसार सन् 2021

क्रम सं.	पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१	मकर-संक्रान्ति (खिचड़ी)	पौष शुक्ल, प्रतिपदा, वि.२०७७	१४.०१.२०२१	गुरुवार
२	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	पौष शुक्ल, सप्तमी, वि.२०७७	२०.०१.२०२१	बुधवार
३	सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती	पौष शुक्ल, दशमी, वि.२०७७	२३.०१.२०२१	शुक्रवार
४	गणतंत्र दिवस	पौष शुक्ल, त्रयोदशी, वि.२०७७	२६.०१.२०२१	मंगलवार
५	महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव	फाल्गुन, कृष्ण, दशमी	१२.०२.२०२१	शुक्रवार
६	वसन्त पंचमी	माघ शुक्ल, पंचमी, वि.२०७७	१६.०२.२०२१	मंगलवार
७	माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती	माघ शुक्ल, पूर्णिमा, वि.२०७७	२७.०२.२०२१	शनिवार
८	शिवरात्रि (ऋषि-बोधोत्सव)	फाल्गुन, कृष्ण, त्रयोदशी, वि.२०७७	११.०३.२०२१	गुरुवार
९	पं.लेखराम वीर तृतीया	फाल्गुन, शुक्ल, तृतीया, वि.२०७७	१६.०३.२०२१	मंगलवार
१०	नवशस्येष्टि/ होलिका दहन	फाल्गुन, शुक्ल, पूर्णिमा, वि.२०७७	२८.०३.२०२१	रविवार
११	आर्य समाज स्थापना दिवस/नवसंवत्सर	चैत्र, शुक्ल, प्रतिपदा, वि.२०७८	१३.०४.२०२१	मंगलवार
१२	श्रीराम नवमी	चैत्र, शुक्ल, नवमी, वि.२०७८	२१.०४.२०२१	बुधवार
१३	पं.गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख, शुक्ल, तृतीया, वि.२०७८	१५.०५.२०२१	शनिवार
१४	हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, तृतीया, वि.२०७८	११.०८.२०२१	बुधवार
१५	स्वतंत्रता दिवस	श्रावण शुक्ल, सप्तमी, वि.२०७८	१५.०८.२०२१	रविवार
१६	श्रावणी उपाकर्म/रक्षाबन्धन	श्रावण, शुक्ल, पूर्णिमा, वि.२०७८	२२.०८.२०२१	रविवार
१७	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद, कृष्ण, अष्टमी, वि.२०७८	३०.०८.२०२१	सोमवार
१८	विश्वकर्मा जयन्ती	भाद्रपत शुक्ल, एकादशी, वि.२०७८	१७.०९.२०२१	शुक्रवार
१९	गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती	आश्विन, कृष्ण, प्रतिपदा, वि.२०७८	०२.१०.२०२१	शनिवार
२०	श्राद्ध तर्पण/पितृ विसर्जन	आश्विन, कृष्ण, अमावस्या, वि.२०७८	०६.१०.२०२१	बुधवार
२१	विजयादशमी/दशहरा	आश्विन, शुक्ल, दशमी, वि.२०७८	१५.१०.२०२१	शुक्रवार
२२	दीपावली/ऋषि निर्वाण दिवस/शरदीय नवशस्येष्टि	कार्तिक, कृष्ण, अमावस्या, वि.२०७८	०४.११.२०२१	गुरुवार
२३	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष, कृष्ण, चतुर्थी, वि.२०७८	२३.१२.२०२१	गुरुवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निदेशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द शर्मा
: 8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्णा जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
सक्रिय सदस्य	–	200 रु. वार्षिक
विशिष्ट सदस्य	–	500 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,000 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	20,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	75,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं.–46900 1000 00651
खाते का प्रकार–बचत खाता

प्रतिष्ठापक

श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक

डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग

डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार

श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में